बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक



आश्चर्यलोक में एलिस

रु. 2.50

मार्च, 87



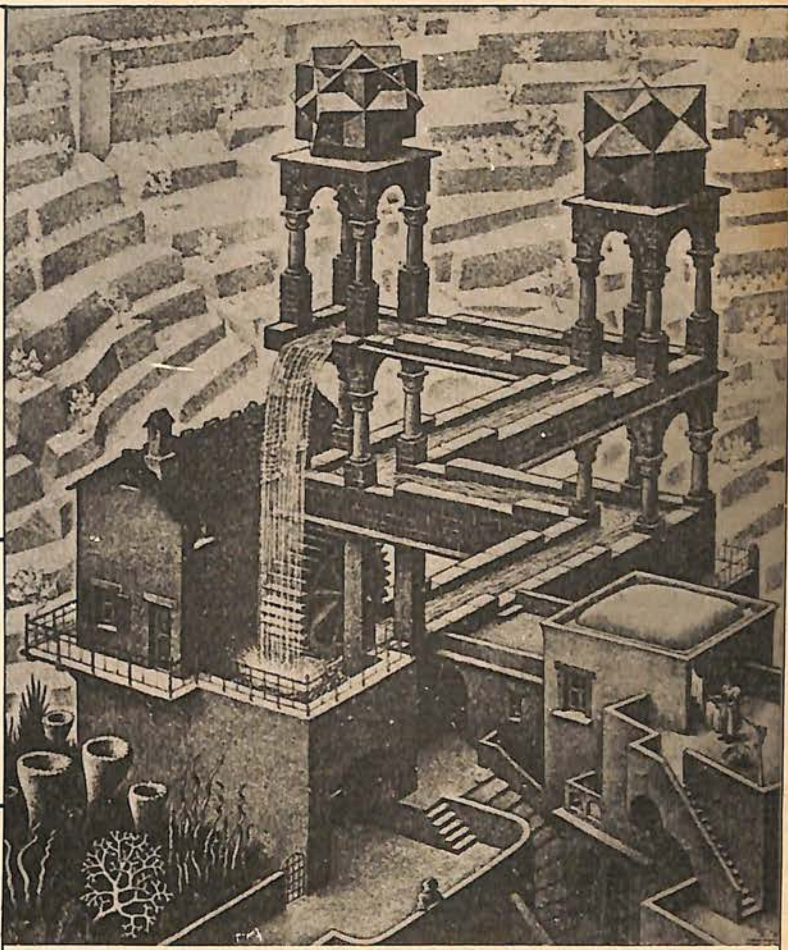
राकेश ठाकुर, ग्यारहवीं,
खापरखेड़ा, होशंगाबाद

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
भाग 2 अंक 9 मार्च 1987

संपादक
विनोद रायना
संपादक मंडल
राजेश उत्साही, निशा व्यास
हरगोविंद राय, गोपाल राठी
कला
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
संपादकीय परामर्श
रेक्स

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा,मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा
एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, *अरेरा कालोनी*
भोपाल 462016 *(म.प्र.)*



*अब तो तुम **एशर** के चित्रों से परिचित हो चुके हो: पानी गिर रहा है या चढ़ रहा है।*

इस अंक में

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



पाठक लिखते हैं

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मेरी भेजी कहानी अच्छी कहानियों में चुनी गई है। मैंने चकमक में सवालीराम जी को कुछ प्रश्न पूछे थे उनके उत्तर हमें प्राप्त हो गए हैं। मैंने उन उत्तरों को ग्रामवासियों को बताया तो उन्होंने सवालीराम जी की बहुत-बहुत प्रशंसा की है। आपके द्वारा साल भर तक जो चकमक उपहार में भेजी जाएगी, उसे मैं समस्त ग्रामवासियों को पढ़वाऊंगा। ताकि उन्हें अपने देश की स्थिति के बारे में पता चले।

□ अनिल श्रीवास्तव
बड़ेरा-बुजर्ग, ग्वालियर

मुझे आभास तक न था कि एक ऐसी अच्छी पत्रिका भी है जो हमारे से अंजान थी। मैंने अपने कई मित्रों को इस पत्रिका के बारे में बताया। सभी ने चकमक को पसंद किया। मेरे पास पिछले 5–6 महीने की सभी चकमक रखी हैं। चकमक में सब कुछ अच्छा आता है। इसे हर बार पढ़ो तो मानो ऐसा लगता है जैसे अभी पहली बार पढ़ रहे हैं। मतलब कि इसका नयापन कभी खत्म नहीं होता। मुझे माथापच्ची अच्छी लगती है, पर आप उत्तर अगले महीने में देते हैं, इस पर विचार करें।

□ अनूप वाधवानी, भोपाल

मैंने आपकी प्रतियोगिता में चित्र बनाकर भेजा था। क्या मेरा चित्र अच्छा नहीं था जो आपने सिर्फ नाम लिखकर भेज दिया। या फिर आपका ऐसा नियम है जो चकमक मंगाए उसी का चित्र छापते हैं। आपकी जनवरी की चकमक बहुत अच्छी लगी क्योंकि इसमें तरह-तरह के चित्र, कविताएं आदि पढ़ने को मिलीं।

□ नीरज वाजपेयी, सातवीं
बलवाड़ा, जिला खरगोन

चकमक प्रतियोगिता के निर्णय के बारे में आपने जो जानकारी दी है, थोड़ा अजीब-सा लगा। मैं यह मानने के लिए तैयार हूं कि आपके पास सैकड़ों ऐसे चित्र गए होंगे जो वास्तव में किसी कैलेण्डर या पत्रिकाओं से नकल किए गए होंगे। किसी चित्र को देखकर ठीक उसी तरह से चित्र बना देना भी एक कला है। क्या आप इस बात से सहमत नहीं हैं? कविता के बारे में भी आप कविता और उसके रचयिता को आलोचना से जुदा नहीं किए हैं। मैं भी यह मानता हूं कि बहुत सारे पाठकों की स्वयं की रचना न रही होगी, लेकिन वे बेचारे भी उस वर्ग में शामिल कर दिए गए हैं जो वास्तव में कविता स्वयं लिखे होंगे। क्या उनके साथ भी आपके निर्णय का नियम बिल्कुल सत्य है? यह मैं कभी मानने को तैयार नहीं हूं। यह जरूर हो सकता है कि कोई पाठक कविता लिखते समय किसी शब्दकोष का सहारा लिया हो, जिससे उसकी कविता में साहित्यिक शब्द आ गए हों और आपके निर्णायक मंडल ने "दूसरों के द्वारा लिखी गई कविता," कहकर उसे कोई महत्व नहीं दिया।

"खेल-खेल में जो चित्र बन जाए वह चित्र है।" यह आपका कथन है। जब कोई पाठक किसी प्रतियोगिता में भाग लेगा तो सोच-समझकर चित्र बनाएगा, उसे अच्छा से अच्छा रूप देने की कोशिश करेगा। किसी की कोशिश सफल भी रही वह भी असफलता की श्रेणी में पहले नंबर पर आ गया। और कह दिया, ऐसे चित्र कई पत्रिकाओं-एलबमों में देखने को मिलते हैं। वाह! क्या निर्णय किया है आपके निर्णायक मंडल ने!

जनवरी अंक के मुख्य पृष्ठ पर आपके अनुसार उल्लू का चित्र है। कोई कहेगा कि उल्लू का चित्र है? वह तो मानव सिर का हिस्सा प्रतीत होता है। बूशली का चित्र भी एकदम बेढंगा। क्या बूशली के हाथ-पांव इसी तरह के थे? लेकिन इस चित्र को प्राथमिकता दी गई है। और यह प्राथमिकता इसलिए कि वह वास्तविक चित्र है। क्यों, है न? वास्तव में यह एक सर्वश्रेष्ठ और खोजपूर्ण चित्र है, इसे तो प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए।

प्रिय संपादक जी, अग्रांकित बातों में जो गलती हो गई हो, क्या क्षमा नहीं करेंगे? कहीं आप यह न कहने लगें कि यह पत्र दूसरों से लिखवाया गया है, अतः मौलिक पत्र नहीं है।

□ शेषनारायण राठौर,
सामतपुर, अनूपपुर
(शहडोल)

मैंने जनवरी का अंक देखा जिसमें आपने कुछ कहानियां प्रकाशित कीं जिसके लिए आपको धन्यवाद। मैंने दो निबंध भेजे थे जिनको आपने स्तरहीन कहकर रद्दी की टोकरी के हवाले किया, इसके लिए आपको और आपके उन विशेष सहयोगियों को भी धन्यवाद जिन्होंने प्रतियोगिता में आएं निबंधों को भी स्तरहीन करार दिया। मैं यह स्वीकार करता हूं कि उसमें कुछ आंकड़ों का विश्लेषण था, जो कि मौलिक नहीं हो सकते। आप भी लेख प्रकाशित करते हैं। क्या उनके आंकडे आप तैयार करते हैं?

□ महिपाल सिंह देरी जखौरा, टीकमगढ़

जनवरी माह की चकमक पढ़कर खुशी हुई कि आपने प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी भाइयों का नाम छापकर उनका उत्साहवर्धन किया। दुख इस बात का है कि आप चकमक पत्रिका में मेरा चित्र नहीं देंगे जो मैंने ही बनाया है। क्योंकि जो छात्र पहले से चित्रकारी करते आ रहे हैं तथा जिनकी चित्रकारी में निखार आता जा रहा है उन्हें आप कहीं नकल न समझ लें।

आप अधिकतर देवास, बिलासपुर के पत्र ही शामिल करते हैं। सभी तरफ ध्यान दिया करें।

□ कृष्ण कुमार राय, बंडा, बेलई (सागर)

प्रतियोगिता में मेरी रचना को शामिल नहीं किए जाने से मैं बहुत निराश हूं। आखिर आप कैसी रचना छापते हैं? क्या मेरी रचना स्तर के मुताबिक व प्रतियोगिता के नियम से दूर थी? आप हम पर यह आरोप कैसे लगा सकते हैं कि हमने बड़ों से लिखवाया था? क्या आप मुझे साहित्यिक मामले में जीरो समझते हैं? आपने प्रतियोगिता, के अंक से मुझ पर तथा अन्य पर अच्छी फब्तियां कसीं तथा हमारी रचना को मौलिक नहीं माना। आपको शायद मालूम नहीं कि मेरा लेख 'प्राचीन भारत, भारतीय संस्कृति तथा अपना देश' अखिल भारतीय स्पर्धा में केरल गया था। मैं जानता हूं कि मेरे इस पत्र को भी आप मजेदार पत्र की संज्ञा देकर चकमक में छापकर मुझे बोर करेंगे।

□ योगेन्द्र पाण्डेय, धरसींवा, रायपुर

पत्रिका में एक बात अच्छी लगी कि बच्चों को पढ़ने के लिए बच्चे ही लिखते हैं। बड़ों की मानसिकता, थोथे उपदेशों का उसमें कोई दखलांदाज नहीं है। यह उनके स्वाभाविक विकास के लिए बहुत जरूरी भी है।

□ हेमंत जैन कट्ठीवाड़ा, झाबुआ

आपने जो 'सम्राट अशोक की सड़क' लेख छापा था, वह बहुत ही बोर था। मैंने तो उसे पूरा भी नहीं पढ़ा। आप ऐसे लेख मत दिया करिए। उसकी जगह बच्चों द्वारा बनाए चित्र, कहानियां आदि दे दिया करिए, तो यह पत्रिका बहुत अच्छी हो जाएगी।

□ दिव्या अग्रवाल भोपाल

जनवरी अंक के लिए बधाई! बच्चों के लिहाज से यह अंक 'सुपरहिट' साबित हुआ है। वैसे, अंक वाकई बहुत बढ़िया निकाला है। सम्पादकीय में उठाए मुद्दे विचारणीय हैं। वैसे, इन्हीं मुद्दों के साथ अगर यह सुझाव भी दिया जाता कि वे अपनी कलात्मक क्षमताओं के सतत् विकास के लिए और आगे क्या कुछ करें, तो शायद और बेहतर रहता। क्योंकि उनमें क्षमताएं तो हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि उन्हें और आगे क्या करते रहना चाहिए।

□ प्रकाश कांत, अरलावदा, देवास

जनवरी माह की चकमक पढ़कर खुशी हुई। खुशी इस बात की भी है कि इसमें छोटे-छोटे बच्चों के लेखन तथा चित्रकला को उल्लेखनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आशा है आप बच्चों की लिखी हुई रचनाओं तथा चित्र को छापते रहेंगे और उनका मनोरंजन करेंगे। बच्चों ने इस पत्र में वही पाया जो वे चाहते हैं।

□ भजन प्रसाद, पटेल
दुलहरा, शहडोल

इसका स्तर घटिया तथा महंगे कामिक्सों से ज्यादा अच्छा है। यह मेरे स्कूल में नहीं आती पर मैं इसका सदस्य हूं। मैंने इसमें ज्यादातर सामग्री ऐसी देखी है जो हमारे मित्रों द्वारा लिखित है।

□ निशांत मिश्रा, सातवीं भोपाल

जनवरी, 87 का अंक मिला, पढ़कर खुशी हुई। जब मैंने वंदना शर्मा का गाय का चित्र देखा तो मुझे बहुत हंसी आई क्योंकि उस चित्र में गाय की छः टांगें थीं। मुझे मध्य पेज का राष्ट्रीय पक्षी मोर का चित्र बहुत अच्छा लगा।

□ सुनील गुप्ता,
बड़ा बाजार, देवास

जनवरी अंक पढ़ा। बड़ा प्यारा रहा। बच्चे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भी अपने चित्र बनाए एवं कहानियां लिखीं। छात्रों ने अपने क्षेत्र में (आदिवासी) जो देखा वैसा अपनी भाषा में लिखा।

□ एन.एल. चौबे पिपरी, देवास

इस अंक में कविताओं के चित्र आमांडा सरकार ने बनाए हैं।



चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

जब से मेरा पता चकमक-दोस्त में प्रकाशित हुआ है दूर-दूर के क्षेत्रों से पत्र-मित्रों के पत्रों की वर्षा सी हो गई है। सचमुच उस समय बेहद खुशी होती है जब दूर से कोई अपनी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाता है। इससे सभी दूरियां खत्म हो जाती हैं।

□ मुकेश स्वर्णकार
बालौदा, रायपुर

1. मनीष नाडकर, नवमीं
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. 60 लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. राजकिशोर त्रिपाठी, आठवीं
2. खो-खो, क्रिकेट खेलना
3. 77 लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. अनीश कुरेशी, आठवीं
2. फुटबाल और क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3. आई. टी. आई. होस्टल, मुक्ति मार्ग, नं. 2, देवास

1. धर्मेंद्र वर्मा, आठवीं
2. खो-खो, क्रिकेट खेलना
3. 73, लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. राकेश अग्रवाल, आठवीं
2. खो-खो, क्रिकेट खेलना
3. तुकोगंज रोड, देवास

1. दिनेश नागेश, आठवीं
2. क्रिकेट खेलना
3. 33 कुम्हार गली, देवास

1. दिलीप शिंदे, आठवीं
2. बेडमिंटन, क्रिकेट खेलना
3. 25 विष्णु गली नं. 1, देवास

1. संजय झंवर, आठवीं, 13 वर्ष
2. कैरम खेलना, क्रिकेट खेलना
3. गली नं. 3, मकान नं. 10, मोहसिनपुरा, देवास

1. मुकेश कुमार बारवाल, आठवीं
2. चित्रकला, क्रिकेट खेलना
3. मकान नं. 24, कुम्हार गली, देवास

1. मनोज कड़ोले, 12 वर्ष, छटवीं
2. क्रिकेट, खो-खो, दौड़ना, सायकिल चलाना, बातें बनाना
3. म. गां. शा. उ. मा. वि. मण्डलेश्वर, खरगोन

1. अनिवाश वर्मा, आठवीं
2. चित्रकारी, पुस्तक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. मकान नं. 66, लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. जयराज सिंह सोलंकी, आठवीं, 8 वर्ष
2. चकमक दोस्त में छपना
3. शा. मा. वि. खण्डलाई, धार

1. मोनिका शरदचंद्र कराड़पेठे, तीसरी, 7 वर्ष
2. पढ़ना-लिखना
3. राधागंज, देवास

1. रवींद्र कुमार सिंह, 8 वर्ष
2. कबड्डी खेलना, पढ़ना
3. प्राथमिक शाला, कोट, सरगुजा

1. मनोहर सिंह राणा, पांचवीं, 12 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना
3. राधागंज, देवास

1. रघुराज सिंह पटैल, दसवीं, 16 वर्ष
2. क्रिकेट, खो-खो खेलना, पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. उदयनगर, देवास

1. कमलचंद्र पाचोटियां, आठवीं
2. चकमक पढ़ना, पत्र मित्रता
3. ग्राम—महूखेड़ा, देवास

1. शैलेंद्र यादव, नवमीं, 12 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3. 32, राधागंज, देवास

1. किशोरी वैष्णव, 6 वर्ष
2. टी. वी. देखना
3. ग्राम—अर्जुनी, रायपुर

1. जयंत दिवाकर हिंगे, पांचवीं, 9 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना, चित्रकारी
3. जेल रोड, गली नं. 2, घर नं. 7, देवास

1. कुंता मांगीलाल चौहान, सातवीं, 12 वर्ष
2. पढ़ना, मां की मदद करना, चित्रकारी
3. भोंसले कालोनी, मकान नं. 11, देवास

1. राजू चौहान, आठवीं, 14 वर्ष
2. चित्रकारी, चुटकुले लिखना, कहानी लिखना
3. 17/4, खटीक मोहल्ला, देवास

1. उमा ओमप्रकाश शर्मा, सातवीं, 10 वर्ष
2. पढ़ना-लिखना, चित्रकारी
3. बैंक नोट प्रेस, देवास

1. आनंद सिंह झाला, आठवीं, 12 वर्ष
2. पढ़ना, कुश्ती लड़ना
3. 11/6 राधागंज, देवास

1. दीपाली बाकलीवाल, दसवीं, 16 वर्ष
2. पढ़ना, फिल्म देखना, हंसना-हंसाना
3. 29 महावीर मार्ग, हाटपीपल्या, देवास

1. उमेश चौहान, छठवीं, 12 वर्ष
2. चित्रकारी, लिखना-पढ़ना
3. मा. वि. उदयनगर, देवास

1. अर्चना कांजले, सातवीं, 16 वर्ष
2. रोमांचक किताबें पढ़ना, चित्र बनाना
3. 19 कृष्णपुरा, देवास

1. पीयूष बालकृष्ण स्वामी, पहली, 6 वर्ष
2. खेलना, पढ़ना
3. 129 महारानी लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. क्षिप्रा भंडारी, आठवीं, 10 वर्ष
2. पढ़ना, खेल-कूद, टी. वी. देखना
3. ए. बी. रोड, देवास

1. वंदना जाटवा, आठवीं, 13 वर्ष
2. चित्रकारी, पढ़ना, लिखना
3. बी. एन. पी. कालोनी, देवास

1. गायत्री कुमारी वर्मा, आठवीं, 15 वर्ष
2. पढ़ना, लिखना
3. मा. वि. नेवरी, ग्राम—महूखेड़ा, देवास

1. दिलीप कुमार खांडे
2. क्रिकेट खेलना, चित्रकारी, अखबार पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. उदयनगर, देवास

1. ललित कुमार पचोटियां, सातवीं, 12 वर्ष
2. चकमक दोस्त में छपना
3. मा. वि. नेवरी, देवास

1. अर्जुन नागर, दसवीं, 16 वर्ष
2. कहानी लिखना, चित्रकारी, समाचार पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. उदयनगर, देवास

1. संजय कुमार जैन, दसवीं, 15 वर्ष
2. चित्रकारी, क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. उदयनगर, देवास

1. लीला बिहारी कौशिक, सातवीं, 13 वर्ष
2. खेलना, तैरना, चित्रकारी
3. बालक पूर्व मा. शा. भैसमा, देवास

1. मनोहर लाल यादव
2. क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल खेलना
3. 84/2 लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास

1. दुर्गाप्रसाद सोनी, पांचवीं, 10 वर्ष
2. कविता-कहानी लिखना
3. 15 जवाहर मार्ग, खातेगांव, देवास

1. कीर्ती सिंह, 12 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, कहानी याद करना
3. मा. विद्यालय, लसुड़िया राठौर (मंदसौर)

1. नवीन चौरे
2. माचिस लेबल संग्रह, डाक टिकट संग्रह, टी. वी. देखना
3. शा. मा. शाला, खैरी कलां, होशंगाबाद

1. कौशल सिंह पुरोहित, 14 वर्ष
2. पत्र मित्रता, टेलीविजन देखना, क्रिकेट खेलना, टिकट एकत्रित करना
3. 83, आजाद चौक, मुलथान, धार

1. सरदार सिंह, 13 वर्ष
2. अंग्रेजी के उच्चारण करना, कैरम बोट खेलना
3. मा. वि. लसुड़िया राठौर, मंदसौर

1. शिव प्रताप सिंह, 17 वर्ष
2. पत्र मित्रता, फिल्में देखना
3. छिर्रा, पोस्ट-कटघोरा, बिलासपुर

1. प्रकाश चंद्र जैन, 16 वर्ष
2. पुस्तकें पढ़ना, गाना-गाना, कविता लिखना।
3. शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला भरवारा, बिलासपुर

1. राजेश कुमार सिंह चौहान, 15 वर्ष
2. चित्र बनाना, पत्र मित्रता, कहानी एवं कविता लिखना
3. 101, गांधी कालोनी, मुरैना

1. साधना सिंह चौहान, 12 वर्ष
2. पत्र मित्रता, चित्रकला
3. 101, गांधी कालोनी, मुरैना

1. ओंकार नाथ पाण्डेय, कक्षा छटवीं
2. किताबें पढ़ना, पत्र मित्रता, खेलना
3. सरसीवां, रायपुर

1. पुरंदर सिंह दीक्षित, 16 वर्ष
2. बैडमिंटन खेलना, घूमना
3. शा. उच्च. मा. विद्यालय, पवनी, रायपुर

1. अरविंद सिंह चौहान, 17 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पत्र मित्रता
3. ग्राम हतनावर, धरमपुरी, धार

1. संजीव कुमार चावड़ा, नवमी, 14 वर्ष
2. चित्र बनाना, पढ़ना
3. सदर बाजार, कन्नौद, देवास

1. कुंवर अजयसिंह सेंधव, नवमीं, 14 वर्ष
2. इतिहास पढ़ना, घूमना
3. गोपी गुराड़िया, देवास

1. राजेश, सातवीं, 13 वर्ष
2. खेल-कूद, पढ़ना-लिखना
3. मा. वि. देहरिया साहू, देवास

1. सुनील गुप्ता, आठवीं, 15 वर्ष
2. पत्र-मित्रता, खेलना, टी. वी. देखना, लोगों की मदद करना
3. 26 बड़ा बाजार, देवास

1. अशोक, सातवीं, 12 वर्ष
2. जंगल की सैर, कुएं पर नहाना, गणित करना
3. राधागंज, देवास

1. गणेश, छठीवीं, 12 वर्ष
2. खेलना, कविता लिखना
3. देहरिया साहू, देवास

1. मुकेश कुमार, सातवीं, 15 वर्ष
2. कीड़े पकड़ना, परिभ्रमण पर जाना
3. देहरिया साहू, देवास

1. रामप्रसाद, सातवीं, 13 वर्ष
2. नाच देखना, साफ रहना, फिल्म देखना
3. देहरिया साहू, देवास

1. दिनेश पाटीदार, सातवीं, 12 वर्ष
2. चकमक पढ़ना
3. गांधी चौक, देहरिया साहू, देवास

1. गुलाबचंद, सातवीं, 12 वर्ष
2. किताबें पढ़ना, रोटी खाना, खेलना
3. देहरिया साहू, देवास

1. गब्बूलाल कारपेंटर, सातवीं
2. गाने सुनना, कीड़े पकड़ना, चुटकुले सुनना
3. देहरिया साहू, देवास

1. दामोदर पाटीदार, सातवीं
2. खेलना-पढ़ना
3. देहरिया साहू, देवास

1. गजराज वर्मा, सातवीं
2. अंग्रेजी पढ़ना, चुटकुले सुनना, परिभ्रमण पर जाना
3. देहरिया साहू, देवास

1. किशोर कुमार तंवर, नवमीं, 14 वर्ष
2. पढ़ना-लिखना
3. 48 पटैलपुरा (प्रतापगंज), हाटपीपल्या, देवास

1. अनीता राठौड़, छठवीं, 13 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, गृह कार्य करना
3. सपना लायब्रेरी, धरमपुरी, धार

1. प्रकाश राठौड़, दसवीं, 18 वर्ष
2. कहानी लिखना, बागवानी
3. सराफा बाजार, धरमपुरी, धार

1. संजोग व्यास, 13 वर्ष
2. क्रिकेट व शतरंज खेलना, चित्रकला
3. माध्यमिक शाला, पीपलियां कलां, होशंगाबाद

1. राजेंद्र कुमार परदेशी, नवमी, 16 वर्ष
2. पढ़ना, पत्र मित्रता
3. राजबाड़ा, धरमपुरी, धार

1. रोहित त्रिपाठी, 15 वर्ष
2. घूमना, पढ़ना
3. चगोरा भाटा, महादेव घाट रोड, रायपुर

1. नितिन कुमार शर्मा, 6 वर्ष
2. पढ़ना खेलना और संगीत सुनना
3. गुरुद्वारा रोड, गद्दी चौक, रायगढ़

1. अतुल कुमार तिवारी, 6 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना
3. दयालबंद ग्रामीण बैंक, बिलासपुर

1. दिनेश गाठिया, 16 वर्ष
2. चित्रकारी, क्रिकेट खेलना
3. हरसूद, खंडवा

1. महेंद्र सोननगरा, 13 वर्ष
2. रेडियो सुनना, नृत्य, टी. वी. देखना
3. माध्यमिक विद्यालय, कांजर, बागली, देवास

1. विशाल राठौड़, 10 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, साइकिल चलाना, चकमक का इंतजार
3. शा. म. गां. उ. मा. वि. मण्डलेश्वर, खरगोन

1. नटवर लाल अग्रवाल
2. सैर करना, पुस्तकें पढ़ना, प्रतियोगिताओं में हिस्सेदारी
3. राधाकृष्ण मंदिर के सामने, सारागांव, कोरबा, बिलासपुर

1. राजेंद्र सिह सरदार, सातवीं
2. क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना, टी. व्ही. एस.-50 चलाना
3. पुलिस लाइन,देवास

1. राजा हेमंत सिह, चौथी, साढ़े सात वर्ष
2. प्रयोग करना, चुटकुले पढ़ना, पहेली हल करना
3. द्वारा—डॉ. आर. बी. भंडारकर, प्राचार्य, शा. उ. मा. शा. राजपुर, रायगढ़

1. झावेंद्र कुमार ध्रुव, दसवीं, 16 वर्ष
2. चित्रकारी, आकाशवाणी में भाग लेना, चकमक पढ़ना
3. ग्राम-पहंदा, महामाई चौक, बलोदाबाजार, रायपुर

1. कृसंत सिंह ठाकुर (डब्लू), ग्यारहवीं, 16 वर्ष
2. पत्र मित्रता, बेडमिंटन खेलना, पत्र-पत्रिकाएं पढ़ना
3. बस स्टेंड के पास, ढाना (केम्प) सागर (म. प्र.)

1. समता पाठक, दूसरी, 8 वर्ष
2. कविता लिखना, अखबार पढ़ना, खेलना
3. द्वारा—श्री जगत पाठक (पत्रकार) एफ, 124/36 अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

1. शिवकुमार पटैल, दसवीं, 16 वर्ष
2. पत्र मित्रता, चकमक पढ़ना, कबड्डी खेलना
3. द्वारा—श्री बी. एल. पटेल, ग्राम सिंगापुर, मल्दा, रायगढ़ (म. प्र.)

1. संतोष कुमार वर्मा, नवमीं, 13 वर्ष
2. पत्र मित्रता, चकमक के प्रयोग करना
3. शा. उ. मा. शा. तोंगपाल, बस्तर- 494115

1. सुधीर पाण्डेय, दसवीं, 14 वर्ष
2. चित्रकारी, पत्र मित्रता, चकमक पढ़ना
3. ए-71, एल. आई. जी., यशोधर्मन नगर, संजीत मार्ग, मंदसौर- 458001

1. सुनील कुमार जैन, पांचवीं, 12 वर्ष
2. टिकट संग्रह करना, चित्रकथा पढ़ना, खेलना
3. शा. मा. शा. बमनौरा कलां, छतरपुर (म. प्र.)

1. अमित त्यागी, पांचवीं, 9 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, शरारतें करना, चित्रकारी
3. दिगंबर जैन (सरस्वती शिशु मंदिर) इंदौर

1. प्रेमकुमार परमार, सातवीं, 13 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ाई करना, जम्प लगाना
3. रेल्वे स्टेशन रोड, देवास

1. नीरज श्रीवास्तव, ग्यारहवीं, 15 वर्ष
2. मैच देखना, क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3. सरस्वती इंटर कालेज, हाउसिंग कालोनी, भिंड

1. राघवेंद्र सिंह ठाकुर, नवमीं, 14 वर्ष
2. पत्रिकाएं पढ़ना, क्रिकेट व बेडमिंटन खेलना, पत्र मित्रता
3. द्वारा—सुरेंद्र सिंह ठाकुर, पूर्व मा. शा. अमरमऊ, सागर

1. कु. जयश्री जैन, छठवीं, 10 वर्ष
2. खेलना, पढ़ना
3. डॉ. महेंद्र कुमार जैन, ग्रा. पो. छोटी कसरावद, खरगोन

1. अशोक सिंह राजपूत, 16 वर्ष
2. पत्रिकाएं पढ़ना, चित्र बनाना, पढ़ना
3. द्वारा—श्री गोविंद सिंह राजपूत, शा. उ. मा. शा. 'कोहका', भिलाई, दुर्ग

1. भूवनलाल ठाकुर, दसवीं, 18 वर्ष
2. फिल्म देखना, खेलना, पढ़ना
3. शा. उ. मा. शा., करहीमदर (बालगेद), दुर्ग

1. राजेंद्र कुमार साहू, दसवीं, 17 वर्ष
2. घूमना, जासूसी फिल्म देखना, चकमक पढ़ना
3. शा. उ. मा. शा. करहीमदर, दुर्ग

1. संजय कुमार परदेशी, ग्यारहवीं, 18 वर्ष
2. चित्रकला, विज्ञान के प्रयोग
3. राजबाड़ा, धरमपुरी, धार

1. दत्तात्रय सोलंकी, दसवीं, 16 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, मित्रता करना
3. शा. उ. मा. वि. पाडल्या, खरगोन

1. दीनानाथ सोनी, 17 वर्ष
2. चित्रकारी, डाक टिकट संग्रह, पत्र मित्रता
3. सोनारपारा, गांधी वार्ड, मुंगेली, बिलासपुर

1. संतोष साहू, नवमीं, 15 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, विषय पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. सिवनी, मरवाही, बिलासपुर

1. आशीष प्रजापति, 10 वर्ष
2. साइकिल चलाना, पुस्तक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. द्वारा—जे. एस. प्रजापति, डिप्टी रेंजर, पोस्ट मोहली, सागर

1. अपर्णा उपाध्याय, 16 वर्ष
2. बागवानी करना, भारतीय सैनिक बनने के लिए नई-नई चीजें सीखना
3. 39 टैगोर नगर, यूनीवर्सिटी रोड, ग्वालियर - 474001

1. प्रफुल्ल कुमार पटैल, 16 वर्ष
2. पढ़ना, क्रिकेट खेलना, माडल बनाना
3. नयापारा, न्यू कालोनी, नेहरु छात्रावास के पास, जगदलपुर, बस्तर

1. सुमंत कुमार पुरोहित, 15 वर्ष
2. व्यंग्य चित्र बनाना, पढ़ना
3. शा. उ. मा. वि. चंदिया

1. अखिलेश तिवारी, 15 वर्ष
2. कहानी, चुटकुले लिखना, घूमना, क्रिकेट खेलना, पत्र मित्रता
3. शनीचरा बाजार, कसेरा मोहल्ला, बाबई, होशंगाबाद

1. पंकज नाडकर, आठवीं,
2. चित्रकारी, क्रिकेट खेलना
3. 60 लक्ष्मीबाई मार्ग, देवास


अनीता और महेश
अनीता, तुम्हारा राशिफल क्या बोलता है ?
राशिफल ? मैं इस बकवास में विश्वास नहीं रखती, महेश !
अखबार में झूठ थोड़े ही छपता है !
अच्छा ?
यह पढ़ो और देखो...यह सच निकलेगा.
ठीक, तुम्हें दिखलाऊँगी – मैं यह पढ़ूँगी और सप्ताह के अन्त में मैं तुम्हें बतलाऊँगी कि यह सच था या नहीं...
यह कहता है "सोमवार और मंगलवार तुम्हारे शुभ दिन होंगे. सप्ताह के बीच में कोई अचानक आयेगा. बुरे समाचार से सम्भलना."
अगले सप्ताह
अनीता ! यह सप्ताह क्या हुआ ?
तो, सोमवार तो अच्छा दिन रहा, मुझे रेलवे-स्टेशन के पास, कीचड़ में दो रूपये मिले.
फिर बुधवार को मेरे मामाजी आये और बतलाया कि मेरी नानीजी बीमार हैं, और शायद उन्हें अस्पताल जाना पड़े
मुझे यकीन नहीं होता ! यह तो ठीक राशिफल के मुताबिक ही हुआ !



चित्रकथा : केरन और लाल्टू

क्या अखबारों में लिखा राशि या भविष्यफल सही होता है?

तुमने भी देखा होगा कि लगभग सभी साप्ताहिक और दैनिक अखबारों में सप्ताह का राशिफल प्रकाशित होता है और शायद हम सब इसे पढ़ते हैं। आमतौर पर नाम के पहले अक्षर या फिर जन्म तारीख से राशिफल देखते हैं। आओ,एक खेल खेलें और पता करें कि यह राशिफल कितना सच होता है।

किसी भी अखबार में प्रकाशित साप्ताहिक राशिफल वाले हिस्से को काटकर रख लो। खेल में भाग लेने वाला कोई भी व्यक्ति इसे न पढ़े। सप्ताह बीत जाने के बाद राशियों का विवरण अलग-अलग चिट पर उतार लो, पर इसमें राशि का नाम मत लिखो, न ही कोई चिन्ह बनाओ। इन चिटों को गड्ड-मड्ड करके मिला दो।

अब इन्हें 1 से 12 तक एक-एक नंबर दे दो। एक चार्ट बनाओ इसमें नाम, जन्म तारीख, राशि तथा चिट नंबर के खाने हों।

अब असली खेल शुरू। अपनी कक्षा या आस-पड़ोस के दोस्तों को ये चिटें पढ़ने के लिए दो और उनसे कहो कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पिछले हफ्ते की घटनाएं याद करे और घटनाओं का विवरण जिस चिट से मेल खाता हो उसका नंबर तथा अपना नाम, जन्म-तारीख और राशि चार्ट में भर दे।

अब चार्ट और अखबार में दिए गए पिछले हफ्ते के राशिफल की तुलना करो।

क्या निष्कर्ष निकला? जो भी आंकड़े, तथ्य आए चकमक को भेज दो। साथ ही इन आंकड़ों तथा तथ्यों से तुम क्या समझे, वह भी लिखना।

तारा समूह पहचानो

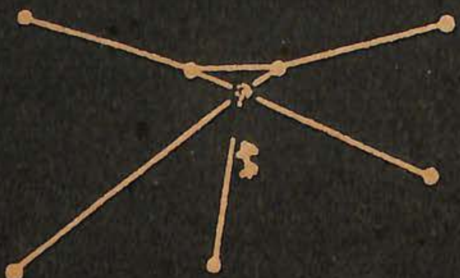
नवम्बर तथा दिसम्बर के अंक में तुमने तारों के बारे में पढ़ा था। इस बार हम तारों से संबंधित यह पहेली दे रहे हैं।

"सात बहिनें" यानि प्लीडस समूह की तरह आकाश में अन्य तारा समूह भी हैं, इनमें से कुछ समूहों के हाथ से बने चित्र नीचे दिए गए हैं। रात को आकाश में इन्हें ढूंढो और नाम मालूम करो। नाम मालूम करने में अपने गुरुजी या घर के बुजुर्गों की मदद ले सकते हो। सही उत्तर भेजने वालों के नाम चकमक में प्रकाशित किए जाएंगे।



सात तारों का एक सुंदर समूह, जिसे "सात बहिनें" या प्लीडस के नाम से जाना जाता है। वास्तव में यह तारे नहीं नेबुला है।

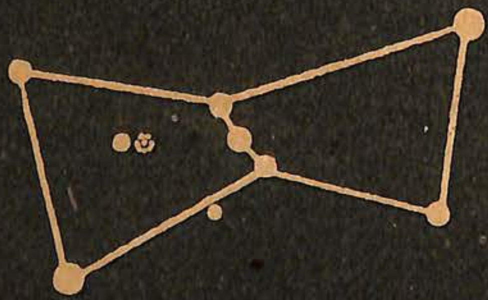
(1)



(4)



(5)



(2)



(6)



(3)



आश्चर्य लोक में एलिस

इस अंक से हम अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध बाल कहानी 'एलिस इन वंडरलैंड' का हिंदी अनुवाद एक लेखमाला के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रस्तुति के पीछे एक लंबी कहानी है, जिसे छोटी करके तुम्हें सुनाते हैं।

इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड शहर में सन् 1862 के आसपास चार्ल्स लुट्विज डाजसन नाम के व्यक्ति रहते थे। वे इसी शहर के सुविख्यात विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाते थे। हालांकि उन्होंने जीवन भर विवाह नहीं किया, लेकिन उन्हें बच्चों से प्यार था। इसी विश्वविद्यालय के एक अन्य प्राचार्य, जिनका नाम लिड्ल था, की तीन बेटियां थीं। उनके नाम क्रमशः लोरीना (13 वर्ष), एलिस (10 वर्ष) तथा एडिथ (8 वर्ष) थे। चार्ल्स लुट्विज का दूसरा प्रसिद्ध नाम ही लुइस कैरल है। कैरल का इन बहनों के प्रति खूब स्नेह था। लुइस इन बहनों को पास की टेम्स नदी में नाव से सैर करवाते थे। इस सैर के दौरान वे उन्हें कहानियां भी सुनाते थे। 'आश्चर्य जगत में एलिस' की शुरूआत भी ऐसी ही एक सैर के दौरान हुई।

लुइस कैरल ने अपने जीवन में ऐसी कई कहानियां लिखीं। इन कहानियों को विश्व के लाखों, करोड़ों बच्चों व बड़ों ने कई भाषाओं में पढ़ा है। मूल भाषा अंग्रेजी थी, बाकी सब अनुवाद थे। इन सब कहानियों में एक खासियत है कि ये साधारणतः बिना सिर-पैर की बेवकूफाना-सी लगती हैं। पर इनका आकर्षण, इनके लिखे जाने के सौ साल से अधिक समय बीत जाने पर भी घटा नहीं है। इस आकर्षण ने समय-समय पर कई शोधकर्त्ताओं को भी अपनी तरफ खींचा है। शोधकर्त्ताओं ने यह जानने का प्रयास किया कि इन कहानियों के पीछे लुइस कैरल के दिमाग में क्या छुपा था। इसके फलस्वरूप कई सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक तर्क-वितर्क सामने आए। एक और महत्वपूर्ण बात भी इन शोधों से सामने आई कि इन कहानियों में विज्ञान व गणित के कई सिद्धांत भी छुपे हैं-आखिर लुइस कैरल थे तो एक गणितज्ञ ही।

हम अलग-अलग समय पर अन्य देशों जैसे, चीन, रूस इत्यादि की कहानियां चकमक में छापते रहे हैं। हमारा बहुत मन था कि 'एलिस' को भी छापें। पर कैसे? सवाल था अनुवाद का। हमने खोजना शुरू किया, एक-दो अनुवाद दिखे, जो काम के नहीं लगे। फिर खबर मिली कि शमशेर बहादुर सिंह जी ने बहुत साल पहले (1960में) एक अनुवाद किया था। खोज दुगने उत्साह से शुरू हुई। पर अनुवाद की प्रति हाथ नहीं लगी। जिस प्रकाशन संस्था ने अनुवाद प्रकाशित किया था उनके पास भी प्रतियां खत्म हो गई थीं। फिर पता चला कि शमशेर जी ने भी लुइस कैरल की तरह यह अनुवाद अपने इलाहाबाद प्रवास के दौरान आस-पड़ोस में रहने वाली कुछ छोटी बच्चियों को समर्पित किया था, जिनमें से एक 'बच्ची' अब भोपाल में ही रहती है। बस, फिर क्या था, उनसे मुलाकात की। उनके माध्यम से अनुवाद की एक प्रति आखिर मिल ही गई।

शमशेर जी को, जो अब अहमदाबाद में रहते हैं, पत्र लिखकर 'एलिस' छापने की अनुमति मांगी जो उन्होंने खुशी-खुशी दे दी।

हां, एक-दो बातें और। शमशेर जी ने अनुवाद के दौरान मूल कहानी में कई जगह थोड़े बदलाव किए हैं, शायद भारतीय बच्चों को ध्यान में रखकर। इस कहानी के साथ जो चित्र हैं, उन्हें लुइस कैरल के अनुरोध पर जॉन टेनियल ने अंग्रेजी के मूल संस्करण के लिए 1865 में सीधे लकड़ी के ब्लाकों पर ही बनाया था। एक तरह से इन चित्रों का आकर्षण भी कहानी से कम नहीं है। हम ये चित्र मैकमिलन एंड कंपनी तथा शमशेर जी के सौजन्य से साभार छाप रहे हैं।

कई जगह, जहां कोई विशेष संदर्भ है या स्पष्टीकरण की जरूरत महसूस की गई है, वहां (1),(2), (3)... जैसे संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों के साथ संदर्भ को उसी पृष्ठ पर नीचे समझाया है। ऐसा शमशेर जी के अनुवाद में नहीं था।

तो लो भई, अब परिचय खत्म और कहानी शुरू!

आश्चर्य लोक में एलिस



इंग्लैंड के एक हरे-भरे कस्बे के बाहर एक लड़की खेल रही है। असल में वह कोई नया खेल ढूंढ़ रही है। सात या आठ साल की उसकी उम्र है।

नाम है एलिस

उसके साथ उसकी बड़ी जीजी है, जिसे किताबें पढ़ने का बेहद शौक है। वह यहां भी एक किताब साथ में ले आई है।

एलिस चाहती है कि जीजी उसके साथ खेले। इसीलिए वह उसे तंग कर रही है।

जीजी कह रही है, "एलिस, तंग मत कर ! जरा-सा और पढ़ने दे, नहीं तो शाम हो जाएगी।"

एलिस–ऊंह! जीजी, क्या पढ़ रही हो तुम भी! न इसमें कोई तस्वीर है, न कोई चुटकुले। न कोई मजे की बातचीत। देखो, सोंधी-सोंधी घास में कैसे सुंदर-सुंदर फूल खिले हुए हैं, डेजी के। आओ न, वही गीत गाकर नाचें, कल वाला!

वह यह कह ही रही थी कि अचानक उसने बड़ी विचित्र बात देखी।

"अरे रे रे रे , वो गया। वो गया!" वह बोल उठी।

जीजी– क्या? क्या गया?

एलिस– खरगोश! वो जा रहा है। वो देखो, जीजी वो देखो!

जीजी- ऊंह, होगा। यहां तो बहुत से हैं।

मगर एलिस ने देखा कि बड़ा विचित्र खरगोश था। वह घास की खुस-पुस में घबराया हुआ-सा कहता जा रहा था, "हाय हाय! बहुत देर हो गई! मारे गए आज तो!"

एलिस भी उसके पीछे-पीछे लपककर गई। मगर वह तो गायब हो गया था। "देखूं, कहां लोप हो गया," उसने कहा। "बेचारा!"

जीजी ने पुकारा, "कहां चली उधर?"

"अभी आई, जीजी!" एलिस ने कहा और भागी। जब खरगोश के जरा नजदीक पहुंची तो एकदम भौंचक्की रह गई।

'अरे!' उसके मुंह से निकला। 'खरगोश और वास्कट पहने हुए! और उसमें घड़ी की चेन! आंय! और वो तो घड़ी निकालकर टाइम भी देख रहा है!'

खरगोश टाइम देखते ही कहने लगा, "हाय, हाय! बड़ी देर हो गई! आज जान नहीं बचेगी!"

और वह तेजी से अपने बिल में घुस गया। और एलिस उसके पीछे-पीछे। "देखूं तो मैं भी, कहां गया!"

वहां बड़ा अंधेरा था। सुरंग चली गई थी सीधी-जमीन के नीचे।

"हा-ा-ा-ा ! लो, मैं तो गई-ई-ई!" एलिस ने चीखकर कहा।

जैसे कोई सीधा कुएं में गिरे। और वह गिरती ही चली गई, गिरती ही चली गई, गिरती ही चली गई।

'हाय, इतना गहरा!' एलिस ने गिरते-गिरते सोचा! 'ओह!'

'भला अब मैं कितनी दूर चली आई हूंगी?' वह मन ही मन हिसाब लगाने लगी। 'अब तो मैं जमीन के



अंदर, बीचों-बीच हूंगी! यह होगा कोई...चार हजार मील तो जरूर होगा! हां!'

उसे इस बात पर गर्व हुआ कि उसे भूगोल याद था।

वह अब भी गिरती ही चली जा रही थी...सीधी....नीचे की ओर। शायद अब और भी तेजी से गिर रही थी।

'मैं कहीं जमीन के पार ही तो नहीं निकल जाऊंगी? (1) वह डरी। 'तब कहां निकलूंगी जाकर? उस देश का नाम तो मुझे क्लास में पूछना पड़ेगा।' उसने सोचा। फिर उसे लगा जैसे वह अपनी क्लास में ही पहुंच गई है, और सबके सामने अपनी होशियारी दिखाने के लिए पूछ रही है, 'सिस्टर प्लीज, यह स्थान न्यूजीलैंड होगा या आस्ट्रेलिया?'

फिर एकाएक उसका इरादा बदल गया। 'नहीं, नहीं, मैं नहीं पूछूंगी। सब लड़कियां हंसेंगी, कि इसको इतना भी नहीं आता। अजी मैं एटलस में देख लूंगी!'

उफ, वह सर्रर की आवाज करती हुई अभी तक सीधी गिरती ही चली जा रही थी! उसे अपनी बिल्ली की फिक्र हो गई। 'दीना पूसी (2) मुझे मुझे खोजती होगी, म्याऊं-म्याऊं करती हुई। पता नहीं, किसी को याद भी रहेगा उसे दूध देना—चाय के टाइम पर! हाय दीना पूसी, न हुई तू मेरे साथ यहां पर! आह! चूहे तो यहां मिलेंगे नहीं। मगर हां, चमगादड़ें जरूर होंगी, तू उसी को चूहा समझ लेना। उड़ता हुआ चूहा।'

वह दिमाग पर जोर लगाकर सोचने लगी, बिल्ली चमगादड़ खाती होगी भला? बिल्ली चमगादड़ खाती होगी भला? बिल्ली चमगादड?... बिल्ली ...चमगादड़ ?

एलिस को शायद नींद आने लगी थी, मगर वह सोचती गई, सोचती गई, 'चमगादड़?....बिल्ली... चमगादड़ बिल्ली खाती होगी? चमगादड़...'

एकाएक जैसे कोई धम्म से पुआल पर गिरता है,



उसे ऐसा लगा। वह डर तो गई, मगर उसे चोट बिलकुल नहीं आई।

'हत्! अरे, मैं यहां कहां—पुआल के ढेर पर!'

अचानक उसकी निगाह सामने गई। उसने देखा, 'वो! वो! जा रहा है खरगोश! ...लो वो तो गया भी!'

उसने आंखों पर हाथ मलकर चारों ओर देखा। एक बड़ा-सा हाल था। मगर बंद। इतने सारे दरवाजे और सब बंद! उसे बड़ा ताज्जुब हुआ। बीच में एक बड़ी शीशे की मेज थी।

'ओह, यह रही चाबी इस शीशे की मेज पर! वाह!'

एलिस ने एक-एक कर सब दरवाजों में वह चाबी घुमाई। मगर वह किसी में नहीं लगी।

एक कोने में उसने एक नन्हा-सा दरवाजा देखा।

'हां, इसी की है यह चाबी! यह लो, खुल गया!'

और उसे कितनी खुशी हुई!

उसमें से झांककर जो उसने देखा तो वह मारे खुशी के पागल हो गई। 'अहा-हा, उधर कितना

---

(1) कई विद्वानों और वैज्ञानिकों ने इस प्रश्न पर गौर किया कि यदि पृथ्वी के बीचों-बीच एक सुरंग बना दी जाए, जो पृथ्वी के केंद्र से होती हुई ठीक दूसरी तरफ पहुंचे तो इसमें कोई वस्तु फेंकने पर क्या होगा? क्या वह वस्तु पृथ्वी को पार करती हुई सुरंग के बाहर गिर जाएगी? प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलिलियो ने इस प्रश्न को हल किया था।

फेंकी गई वस्तु तेज होती हुई गति से पृथ्वी के केंद्र की तरफ गिरेगी। केंद्र के नजदीक जाती हुई वस्तु पर पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल घटता जाएगा। केंद्र पार होते ही वस्तु पर गुरुत्वाकर्षण बल बढ़ने लगेगा। इस खिचाव के कारण वस्तु की गति धीमी होती जाएगी। पृथ्वी के दूसरी तरफ पहुंचते ही वस्तु पूरी तरह थम जाएगी और फिर सुरंग में वापस उलटी गिरना शुरू कर देगी। इस तरह पृथ्वी के आर-पार बनी सुरंग में फेंकी गई वस्तु दोलन करती हुई (अगर उस पर अन्य कोई बल न लग रहा हो) हवा के घर्षण के कारण धीरे-धीरे रुक जाएगी। इस बात की तुलना धागे से लटके हुए एक पत्थर से करो, जो दोलन करता हुआ धीरे-धीरे थम जाता है।

(2) लिड्ल बहनों की बिल्ली का नाम दीना था, और अंग्रेजी में प्यार से बिल्ली को पूसी कहते हैं।

अच्छा बाग है! कैसे रंगीन-रंगीन फूल चमक रहे हैं। चलूं, वहीं चलकर खेलूं!'

मगर तुरंत उसे निराशा का मुंह देखना पड़ा। 'हाय, मेरा तो सिर इसमें अड़ जाता है! अब क्या करूं, हाय रे! अगर कहीं मैं नन्ही-मुन्नी गुड़िया के बराबर हो जाती,' उसने सोचा, 'तो अभी ...चुटकी बजाते उस पार!'

'शायद हो भी जाऊं, शायद हो भी जाऊं, !' उसने सोचा। 'आज ऐसी अजीब-अजीब बातें हो रही हैं, कि ताज्जुब नहीं कोई ऐसी दवा मिल जाए-या कोई तरकीब कहीं लिखी हो, किसी किताब में!'



तभी वह चौंक-सी पड़ी। 'अरे, यह क्या! बड़ी खुशबू आ रही है! शरबत की-सी!'

उसकी निगाह एक शीशी पर गई। लेबिल पर लिखा था, 'मुझको पी लो!'

एलिस ने शीशी उठा कर पढ़ा, 'मुझको पी लो!'

'पर जाने क्या हो,' उसने सोचा। 'पिताजी ने कहा था कि जिस पर 'जहर' लिखा हो, उसको कभी नहीं छूना चाहिए। नहीं तो बड़ी खराबी पैदा हो जाती है। मगर इस पर तो 'जहर' नहीं लिखा है। जरा-सा चखकर देखूं। बस जरा-सा!' उसने तय किया। जबान पर रखकर उसने देखा, फिर जोर से चटखारा लिया। और लगा जैसे इमली और अनन्नास का गूदा और खट्टे-मिट्ठे बेर और टॉफी और खूब सिका हुआ टोस्ट और मीठी-चटनी, सबका स्वाद एक में मिला हुआ हो।

'देखूं अब क्या होता है!' उसने कहा।

थोड़ी ही देर में वह मारे खुशी के चीख उठी, 'हुई-ई-ई-ई! मैं तो सचमुच छोटी हो रही हूं! एक गुड़िया-सी! मेरे हाथों को देखो! अरे, और मैं अब कितनी छोटी हो जाऊंगी। कहीं छोटी होते-होते एकदम से खत्म न हो जाऊं, जैसे मोमबत्ती।'

इस विचार के आते ही वह एकदम डर गई।

मगर वह और छोटी नहीं हुई।

वह दौड़ी-दौड़ी दरवाजे तक गई। मगर फिर उसे धक्का लगा। 'अरे, दरवाजा तो बंद! और चाबी कहां? हाय, चाबी तो शीशे वाली मेज पर ही रह गई!'

अब एक नई मुश्किल उसके सामने थी। वह इतनी छोटी हो गई थी कि चाबी तक पहुंचना ही असंभव था।

'हाय रे!' वह रोने लगी। 'यह तो बहुत ऊंची हो गई! कैसे पहुंचूं? मेज के पाये भी तो फिसलने हैं! हाय, हाय, कैसी मुसीबत है! हाय रे!'

वह सिसकियां, भर-भरकर रोने लगी। उसे अपनी मां की याद आई और वह और भी रोने लगी। थोड़ी देर बाद उसे याद आया कि मां उसे किस तरह चुप कराती थी, और वह आप ही आप अपनी मां की आवाज में अपने आप को समझाने लगी। 'बस कर, बस कर! एलिस, तू तो रानी बिटिया है! कहीं रानी बिटियां रोती हैं? वो तो गंदे-गंदे बच्चे रोते हैं! इस तरह! छी! बस! और आप ही आप मानकर उसने रोना बंद कर दिया।

'हां, बस !'

फिर वह अपनी टीचर की नकल करके अपने आपको समझाने लगी, 'देखो एलिस, इधर देखो। तुम एक अच्छी लड़की हो। हां, ऐसी छोटी-छोटी बातों पर अच्छी लड़कियां नहीं रोती हैं। है न? अच्छा, इसी बात पर अपने कान पकड़ो कि अब कभी नहीं रोएंगे।' एलिस ने अपने कान भी पकड़ लिए।

'शाबाश!'

एकाएक कोने में उसकी नजर गई। 'यह उधर क्या चमक रहा है-डब्बा-सा?' उसने कहा। 'इसमें क्या होगा, देखें!'

'अरे, यह तो केक-सा है कुछ,' उसने हाथ डालकर देखा। 'और इस पर लिखा भी है, 'मुझको खाओ!' 'जरा-सा कुतर के देखूं। कोई हर्ज नहीं-बस जरा सा। देखूं, इसके खाने से क्या होता है!' एलिस ने थोड़ा-सा खाकर देखा।



'अभी तक तो कुछ भी नहीं हुआ।पूरा खा जाऊं। देखी जाएगी।'

'था तो अच्छा!' उसने जबान चटकाकर कहा।

थोड़ी ही देर बाद उसे फिर अपने ऊपर अचंभा होने लगा।

'ऊ-ऊ-ऊ-ऊ!' एकाएक उसके मुंह से निकला। 'यह क्या हो रहा है! मेरा सिर कहां पहुंच रहा है! यह गर्दन...अरे मेरी गर्दन...यह तो एक फुट की हो गई! और मेरे पांव कहां गए? मेरे पांव! इतनी दूर! सलाम है तुम्हें, दोनों पांवों को! हम तो चले ऊपर! तुम वहीं रहना! हाय, जूता, कौन पहनाएगा तुम्हें? किसी तरह आप ही पहन लेना भाइ!' बड़ी हमदर्दी दिखाकर वह बोली।

कहीं मुझसे नाराज हो गए तो मुझे उलटे-सीधे चलाओगे। अच्छा, नाराज मत हो ओ! मैं हर नए साल के दिन बढ़िया-सा एक जोड़ा जूते का भेंट किया करूंगी। अच्छा? मगर ये जोड़ा जूतों का मैं तुम्हें भेजूंगी कैसे? तुम इतनी दूर पहुंच गए!....अच्छा हां, पार्सल से भेज दिया करूंगी। और क्या नहीं तो फिर!

'कैसा अजीब लगेगा!'

'तुम्हारा वाजबी पता तो उस पर लिखा ही रहेगा-

''सेवा में,

एलिस के श्रीमान् दाहिने पांव साहब को,

स्थान-वही कमरा

(मिठाई-बिस्कुट वाला)

पास अलमारी के।

एलिस का बहुत-बहुत प्यार।''

एकाएक एलिस अपने ऊपर खीझ उठी। 'हाय री, मैं क्या सोच रही हूं, अंट-संट, पागल लड़की!'

तभी उसका सर ठक् से जाकर छत से टकराया।

'अरे-रे मेरा सर! मेरा सर तो छत से जा टकराया। मैं पूरी छत के बराबर हो गई!'

अब उसे चाबी याद आई। 'और वह चाबी?'

फिर वही मुसीबत! और कैसी मुसीबत सी मुसीबत!

उसे अपनी बेचारगी पर रोना आ गया और वह जोर-जोर से रोने लगी। 'हूं ऊं-ऊं! कहां आकर फंस गई! ऊं-ऊं!'

फिर एकाएक अपने आपको जोर से डांटा, 'एलिस की बच्ची! फिर रोएगी?' और एक थप्पड़ जोर से अपने मुंह पर मारा। वह चुप तो हो गई, मगर हिचकियां बराबर कुछ देर तक जारी रहीं।

किसी के हलके-हलके पैरों की आवाज आ रही थी।

चौंककर एलिस ने देखा तो वही खरगोश! वह सांस रोक कर उसे आता हुआ देखने लगी।



''हाय,इतनी देर हो गई!''वह कहता आ रहा था! ''हाय,मलका महारानी आज मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगी! हाय-हाय।''

एलिस ने मन ही मन सोचा, 'क्या करूं,? इसी से कुछ मदद मांगूं?' उसे यह देखकर बड़ा अचंभा हुआ कि वह एक हाथ में पंखा हिलाता हुआ आ रहा है और एक में दस्ताने। 'तो पूछूं इसी से?' एलिस ने सोचा। और डरते-डरते उसने पूछ ही लिया, ''देखिए, महाशय, जरा मेहरबानी करके मुझे...''

आवाज सुनते ही खरगोश बेचारा उलटे पांवों भागा और अपनी घबराहट में पंखा और दस्ताने भी वहीं छोड़ गया।

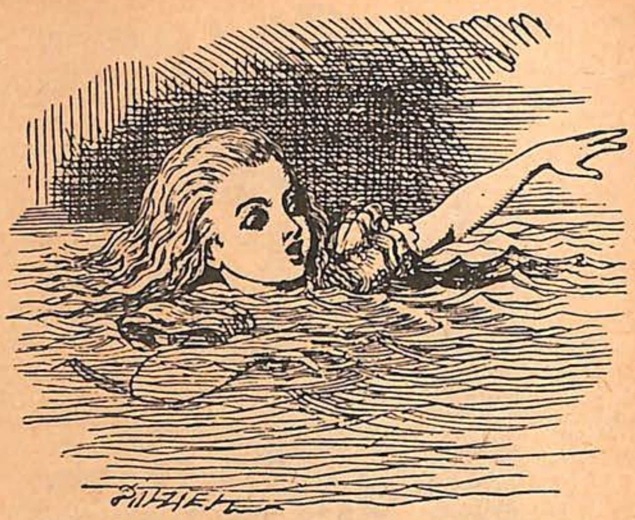
एलिस ने उन्हें उठा लिया। 'ये दस्ताने कैसे नन्हें-नन्हें से हैं! यह पूरा दस्ताना तो मेरी एक उंगली में आ जाएगा।' और यह रंगीन पंखा कैसा हलका है, जैसे चिड़िया का पर!. ..आज कैसी अजीब-अजीब बातें हो रही हैं मेरी जिंदगी में!' एलिस ने सोचा।

'कल तो सब ठीक-ठाक था। आज ही मैं कुछ अजीब-अजीब सी हो रही हूं। कल तो मैं ऐसी नहीं थी। मैं तो वही हूं-वही एलिस!...या कोई और लड़की हो गई हूं। एं? कुछ समझ में नहीं आता।'

'यह तो तय है कि मैं ईदा नहीं हूं। इसलिए कि मेरे बाल सीधे हैं, घुंघराले नहीं, जैसे ईदा के हैं!...और मैं माबेल भी नहीं हूं,' एलिस ने सोचा, ' क्योंकि मुझे बहुत-सी बातें पता हैं, और वह एकदम बुद्धू है-बुद्धू नफर। हाय, कितना कम जानती है वह! देखूं तो मुझे सब बातें याद भी हैं कि नहीं, जो मैं जानती थी!' और एलिस ने अपना इम्तहान लेना शुरू किया।

'अच्छा बताओ : चार पंजे?...बारह। और चार छक्के, ...तेरह। और चार सत्ते?...हाय लोगो! इस तरह से तो मैं बीस तक भी नहीं पहुंचूंगी। (3) अच्छा, पहाड़े नहीं। कुछ और। भूगोल में पूछूंगी। अच्छा, तो लंदन क्या है?...पेरिस की राजधानी। और पेरिस?....पेरिस है रोम की राजधानी!...नहीं, नहीं, नहीं। सब गलत! जरूर गलत है। हाय, मैं जरूर माबेल हो गई हूंगी। हाय, यह क्या हो गया? मैं माबेल होकर यहां आ पड़ीहूं!हाय,हाय,हूं-ऊं-ऊं-ऊं...अब मैं नहीं जाऊंगी यहां से। कैसी बुद्धू हूं मैं! कैसी अकेली पड़ी हूं यहां! हाय, अम्मा!'

अजीब उलझन में पड़कर एलिस रोने लगी।



रोते-रोते उसने देखा कि दस्ताने उसके पूरे हाथ में आ गए थे। चौंककर उसने आंखें पोंछी।

'ये दस्ताने मेरे हाथ में कैसे आ गए? ये तो छोटे थे!' उसने आंखें फाड़कर देखा। 'ओ हो! वह पंखे की कारस्तानी है। हो न हो यही बात है!'

'अब चलूं चटपट बाग में!...बाहर, फूलों के बीच! हुर्रे, कैसी छोटी-सी हो गई हूं मैं! हुर्रे!'

वह बड़ी खुश थी। मारे खुशी के वह नाच उठी।

'अर्र र र...! यह क्या हुआ? मैं फिसल गई!'...और सचमुच नीचे की रपटन से वह एकदम पानी में गिर पड़ी।

'अरे यह तो कोई नदी का किनारा आ गया! नहीं, नहीं इसका पानी तो समुद्र-सा खारा है! ....अरे नहीं, एलिस!' उसने अपने आपको याद दिलाया, 'यहीं बैठकर तू तो अभी रोई थी, जब तू देव-जैसी बड़ी हो गई थी! ....तो क्या आंसुओं की नदी बह गई? हाय अम्मा!'

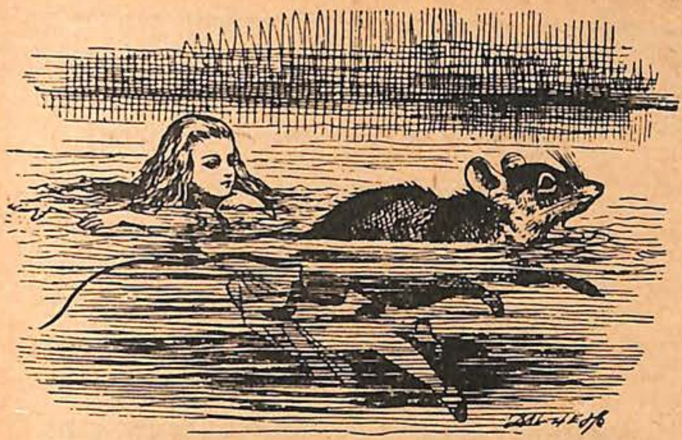
'और यह दुम किसकी है इसमें? छिः!' उसने गौर से देखा। 'अरे, ये भैंसे तो नहीं हैं? नहीं....नहीं। मैं एकदम छोटी जो हो गई हूं, बटन-सी, इसलिए मुझे ऐसा लग रहा है! यह तो साफ चूहा है-बड़ा-सा।,

'पुकारकर देखूं?' एलिस ने दिल में सोचा। उसे तरस आ रहा था उस पर। 'बेचारे की मेरी ही जैसी गत हो गई है। बल्कि वह तो और बीच में है, और डूब रहा है!'

''ओ मूसजी!'' एलिस ने पुकारा। ''अजी, ओ मूसजी!''

---

(3) क्योंकि इस गड़बड़ क्रम से बढ़ने पर चार का पहाड़ा इस तरह होगा : चार गुणा पांच, बारह; चार गुणा छह, तेरह; चार गुणा सात, चौदह..... और चार गुणा बारह होगा उन्नीस। एलिस ने केवल बारह तक का ही पहाड़ा सीख रखा था, इसलिए इस क्रम में पहाड़े कहने से वह बीस तक पहुंच ही नहीं सकती थी।



'मूसजी सुनते ही नहीं हैं! जाने किस देश के हैं,' एलिस ने सोचा। 'फ्रांस के होंगे शायद, फ्रेंच में पूछूं!'

"ऊ, एस्त मा शत! मेरी बिल्ली को देखा है आपने?" एलिस ने पुकारकर पूछा।

मूसजी तो हड़बड़ाकर पानी में उछलने लगे।

"अरे, क्षमा कीजिएगा। मूसजी! मुझे मालूम नहीं था, आपको बिल्लियां पसंद नहीं हैं। कहीं अगर आपने मेरी दीना पूसी को देखा होता तो उसे आप जरूर ही पसंद करते। बहुत ही अच्छी है मेरी दीना पूसी। मुलायम-मुलायम! गोद में बैठकर घर्र-घर्र करती रहती है। कैसी प्यारी-सी है।और चूहों को तो पकड़ने में ऐसी उस्ताद....!"

चूहे पकड़ने की बात कान में पड़ते ही मूसजी फिर पानी में उलटे-सीधे होने लगे।

"भई, क्षमा कीजिएगा, क्षमा कीजिएगा! सच, मैं भूल गई थी! दूर मत जाइए मुझसे! मैं अब कुत्ते-बिल्लियों की बात आपसे बिलकुल नहीं करूंगी। आइए, आइए, हम लोग इस तरफ से तैरकर बाहर निकल जाएंगे!.....देखिए, इधर से और लोग भी तो तैरकर बाहर निकल रहे हैं,सब के सब यहां डूब रहे थे!"

मूसजी को ढाढ़स बंधा, और वह एलिस की तरफ बढ़े।

"देखिए," एलिस ने कहा, "वह बतख महाराज हैं, वो डोडो (4) बत्तख है, वह लोरी (5) तोता है। कैसा बड़ा-सा है! और भी बहुत से लोग हैं। आइए, आइए, इधर से निकल आइए! अब तो हम बहुत सारे दोस्त इकट्ठे हो गए!"

(अगले अंक में जारी)

(4) डोडो एक ऐसे पक्षी का नाम है जो सत्रहवीं शताब्दी में ही लुप्त हो गया था। यानी सत्रहवीं शताब्दी के बाद डोडो की जाति का कोई सदस्य नहीं बचा है। लुइस कैरल को बच्चे प्यार से 'डोडो' के नाम से पुकारते थे। कैरल हकलाते थे और जब अपना असली नाम बताते तो "डो...डो..... डौजसन" कहते थे।

(5) लोरी एक आस्ट्रेलियाई तोता है। पर यहां लोरी से, लोरीना लिड्ल के नाम की ओर संकेत है।







लुइस कैरल ने 'एलिस इन वंडरलैंड' के चार प्रारूप लिखे। जो अनुवाद तुम यहां पढ़ रहे हो, वह चौथे प्रारूप का ही है। लुइस ने दूसरा प्रारूप अपनी हस्तलिपि में और खुद चित्र बनाकर एलिस को भेंट किया था। इन्हीं चित्रों में से एक कहानी की शुरूआत में और दो यहां दिए गए हैं। दूसरे प्रारूप के अंत में लुइस ने एलिस का वास्तविक चित्र (बीच में) भी प्रकाशित किया था।

बाल्टी कुएं में गिरी

एक दिन की बात है। हमारे घर वाले सभी लोग बाहर चले गए थे। उस दिन मुझे ही पानी भरना पड़ा। कुएं पर पानी लेने गया तो भीड़ बहुत थी। क्योंकि हमारे गांव में एक ही कुआं है। मैं कुछ देर कुएं पर खड़ा रहा, जब भीड़ हट गई तो मैंने बाल्टी रस्सी बांधकर कुएं में डाली। जब बाल्टी पानी से भर गई तो मैं भरी बाल्टी कुएं से निकालने लगा। हुआ ये कि बाल्टी कुएं में रह गई। मैं घर आया तो सभी लोग घर पर आ चुके थे। घरवालों ने जब मेरे हाथ में रस्सी अकेली देखी तो बहुत नाराज हुए। मुझे डांटा तो मैं एक रस्सा लेकर कुएं पर गया और रस्सा एक खंभे से बांधकर मैं कुंए में उतरा। मैंने कुएं में डूबा मारकर बाल्टी ढूंढ़ ली। मैं बाल्टी उसी रस्सा में बांधकर ऊपर आ गया और बाद में बाल्टी ऊपर खींच ली। फिर मैं बाल्टी घर पर बड़ी मुश्किल-मुश्किल से लाया। बाल्टी लाने में मुझे बड़ा कष्ट हुआ और मैंने बाल्टी रख दी। फिर मैंने निश्चय कर लिया कि मैं पानी लेने नहीं जाऊंगा।

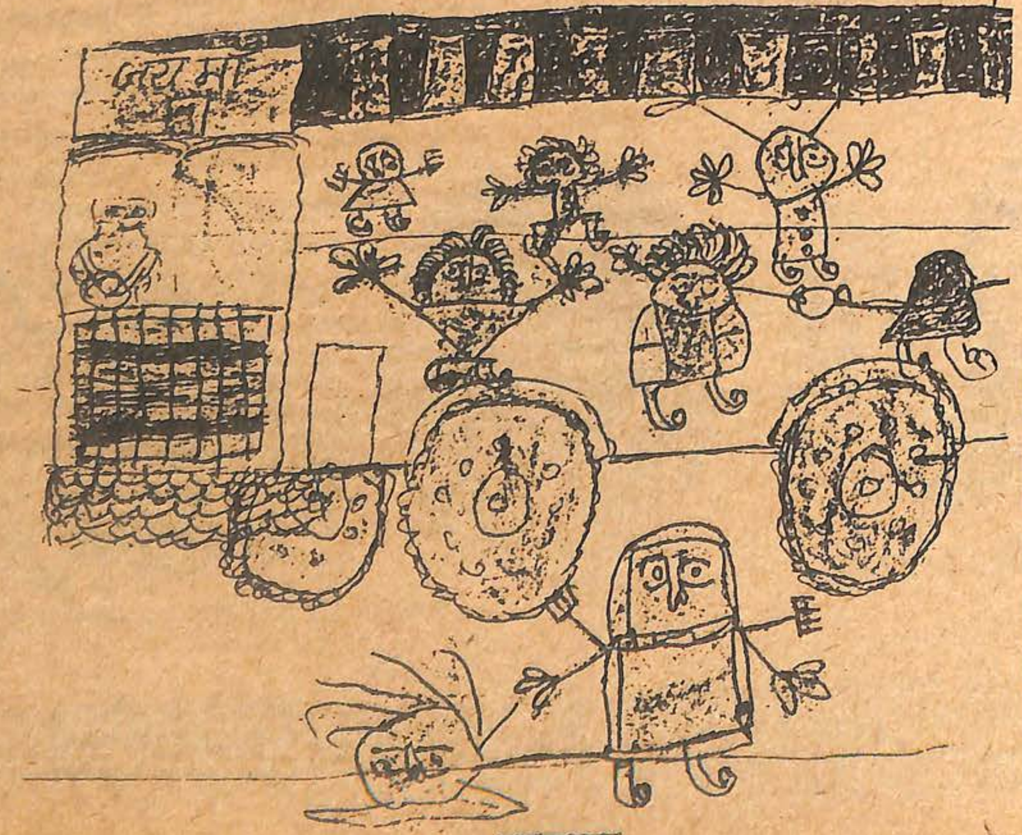
□ मुकेश कुमार दुबे, आठवीं
सुरेलारंधीर, बनखेड़ी
होशंगाबाद

पड़ोस में पहली बार तार आया

बात गर्मियों की छुट्टी की है। मैं अपने मामा के घर मां के साथ गई थी। मैं नलकूप से तरोताजा नहाकर लौटी तो देखा, मेरी मामी और मां पड़ौस के घर की पौर में बैठी एक 55 वर्ष की बुढ़िया के पास खड़ी हैं। बुढ़िया तार मिलने से चीख-चीखकर रो रही थी। मां और मामी ने बुढ़िया से पूछा, 'अम्मा जी क्या हो गया?' पर बुढ़िया रोए जा रही थी। उसके हाथ में एक कागज था। बहुत पूछने पर उसने बताया तार आया है। मां ने उसके हाथ से तार लिया। पढ़ने पर वे अपनी हंसी न रोक पाई। मां बोलीं, अम्माजी कल आपकी बिटिया की बिदाई हुई है न? बुढ़िया बोली, हां बिटिया, उसे क्या हो गया? मां ने कहा, किसी को आपने विवाह का न्यौता दिया था क्या, जिनका नाम योगेश है। बस, उन्होंने शादी में न पहुंच पाने के कारण बधाई का तार भेजा है, मतलब वर-वधू को बधाई लिखी है।

बुढ़िया आंसू पोंछकर कहने लगी, 'आजकल जमाना तो देखो, बधाई तक तार से आने लगी।' हम सब का आठ-दस दिन तक इस बात को लेकर खूब मनोरंजन हुआ।

□ मीनू यादव, छठवीं
सालेचौका, नरसिंहपुर



कमलचंद्र पाचौरिया, आठवीं महूखेड़ा, देवास

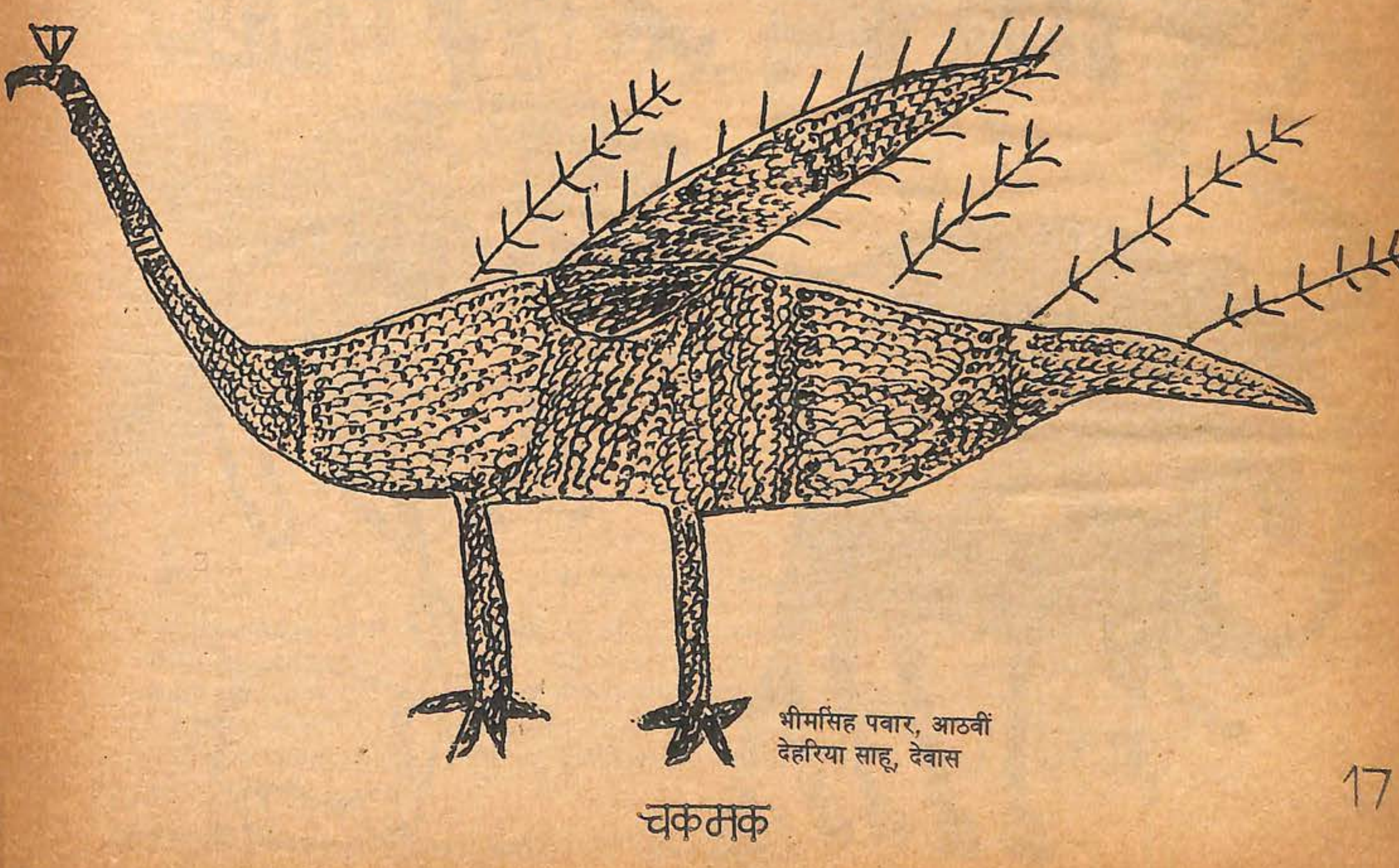
अगर मैं शिक्षक बन जाता

अगर मैं शिक्षक बन जाता,
हाथ पर बांध घड़ी
लेकर छड़ी पढ़ाने जाता। अगर मैं......
कक्षा में जाते ही फौरन,
सब लड़कों को डांट लगाता।
अगर जरा भी हल्ला होता,
तुरंत दंड बैठक लगवाता। अगर मैं.....
कितनों ने कर लिए सवाल,
कितने बैठे कोरे हाल।
उनकी गलती को बतलाकर,
ब्लेक बोर्ड पर फिर समझाता।अगर मैं...
कौन पड़ोसी देश हमारा,
कहां और कब तक वह हारा।
कौन हमारा प्यारा नेता,
सब देशों में लोहा लेता।
मैं उनको इतिहास पढ़ाता,
अगर मैं शिक्षक बन जाता.....

□ राबेंद्र कुमार
ग्राम पगरा, पन्ना



लीलाधर, छठवीं
पालड़ा, शाजापुर



भीमसिंह पवार, आठवीं
देहरिया साहू, देवास



1



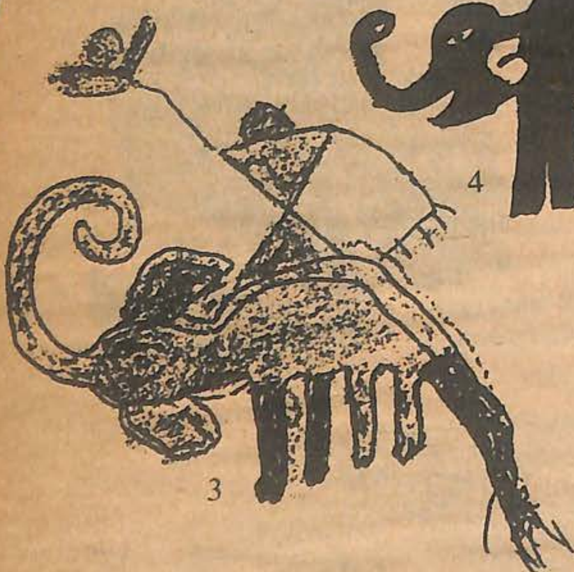
2



5



4



3



7



6



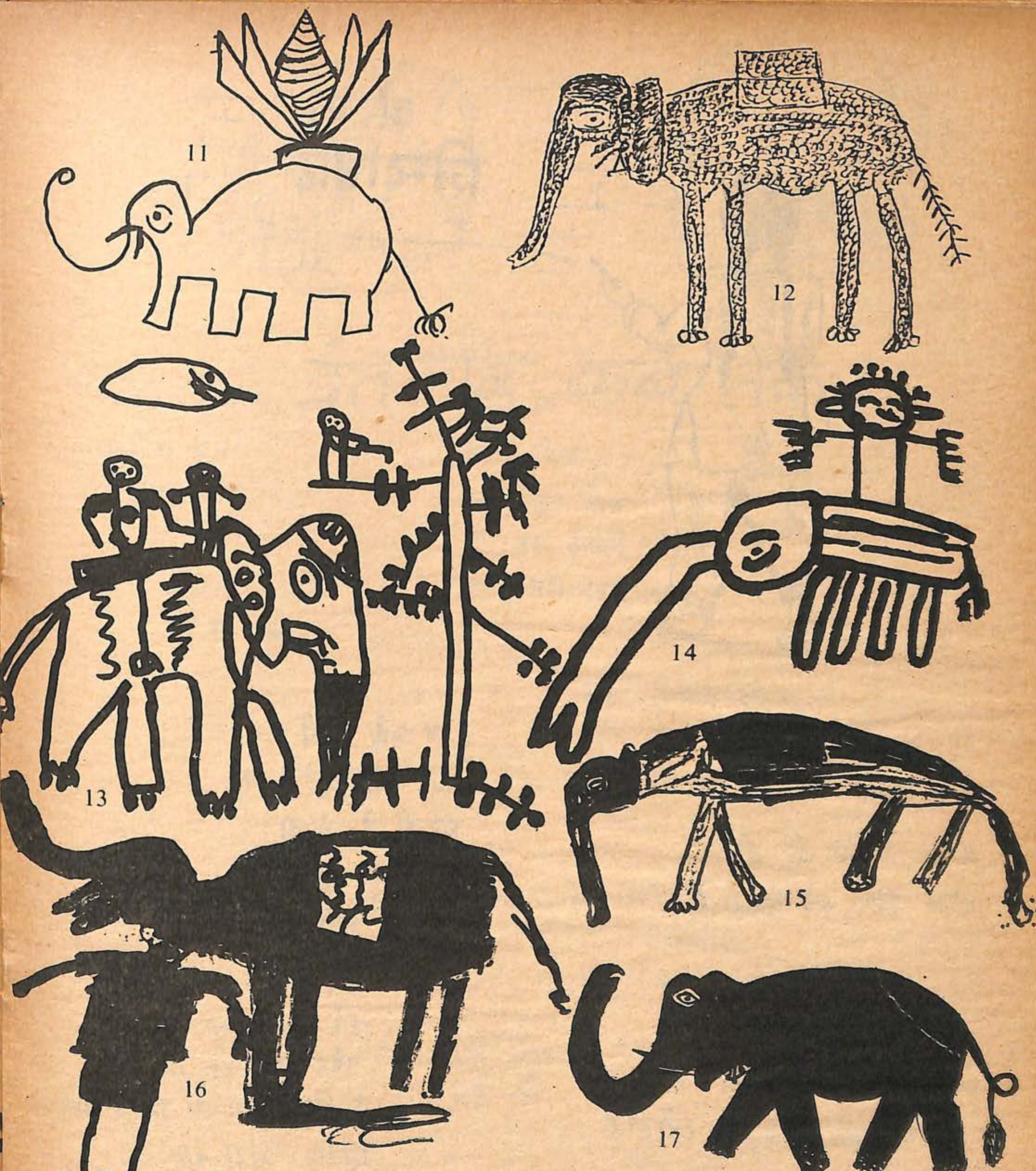
9



8



10



ये चित्र इन्होंने बनाए हैं:

(1) अजयपालसिंह, छठवीं (2) रेखा, छठवीं, भामोरी (3) श्रीकांता कुमारी, पांचवीं, देहरिया साहू (4) मनोहर लाल गोठी, देहरिया साहू सभी देवास (5) कालूसिंह, छठवीं, पालड़ा, शाजापुर (6) किशोर, चौथी, चापड़ा (7) ओमप्रकाश, छठवीं, भामोरी (8) गजराज वर्मा, देहरिया साहू (9) संतोष पाटीदार, आठवीं, देहरिया साहू (10) हरलाल, छठवीं, पालड़ा, शाजापुर (11) मुकेश पाटीदार (12) भीमसिंह पवार, आठवीं (13) कमलेश, चौथी, देवास (14) सुभाष भंडारी, करनावद (15) संतोष पाटीदार, आठवीं, देहरिया साहू सभी देवास (16) त्रिलोक चंद पाटीदार, करनावद (17) लीलाधर, छठवीं, पालड़ा, शाजापुर



आ गया त्यौहार
फैल गयी रोशनी
बड़कू ने रंग दी दीवार
लिख दिया बड़े अक्षरों में

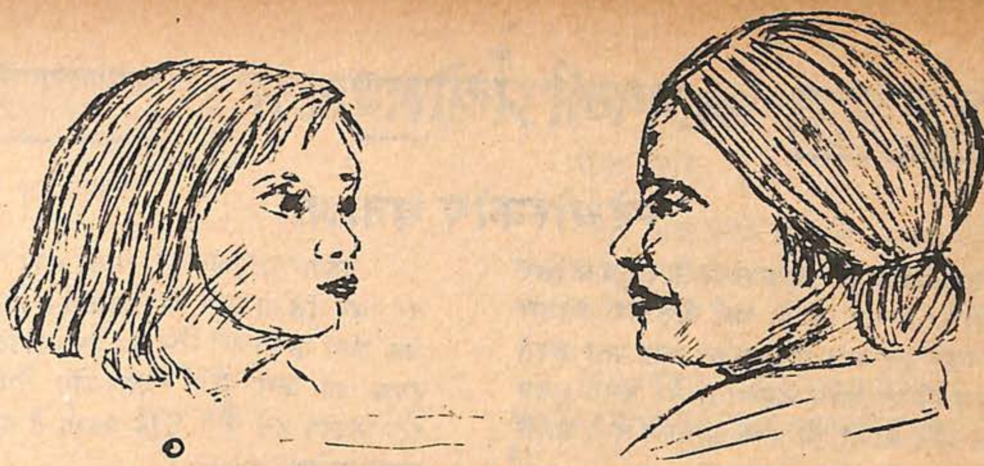
अब से हर रात
फैलेगी रोशनी
दूर अब अंधकार
हर दिन है त्यौहार

छुटकी ने देखा
धीरे से कहा
अब्बा पीटेंगे भैया

हुआ भी यही
मार पड़ी बड़कू को
छुटकी ने देखा
धीरे से कहा
भैया, मैं बदला लूँगी

फिर सुबह आयी
नये एक सूरज
और नयी एक दीवार ने
दे दिया नया एक विश्व सबको
दीवार खड़ी थी
अक्षरों को ढोती
भैया जिन्दाबाद।

बाल्टू



इंतजार, कब तक !

खड़े हैं लोग
आयेगी बस
जायेंगे लोग

कौन चढ़ेगा
वह मोटा सेठ
या वह दुबली सी
फटे कपड़ों वाली लड़की

कविता सयानी
माँ से पूछा -

कैसा रंग होगा
बस का

कौन सा झंडा
होगा उस पर

होगी कैसी चीख
हार्न की

क्या गायेगा ड्राइवर
नया कोई गाना

माँ ने कहा
पगली
पहले यह तो सोच

कहाँ जायेंगे लोग
क्या पता है इन्हें
क्यों जा रहे हैं यह

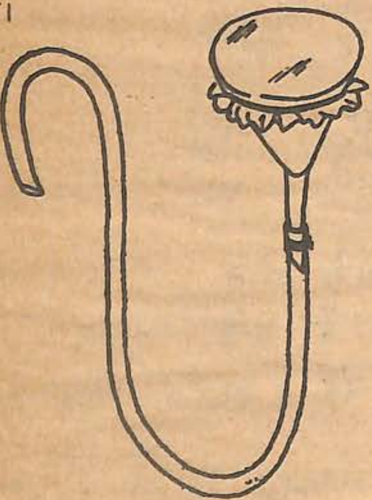
कब से खड़े हैं लोग
कहीं ऐसा न हो
बस रुके भी न
ताकते रह जायें लोग !

स्टेथोस्कोप बनाओ

अस्पताल में डॉक्टर एक लंबी सी ट्यूब के सिरे पर लगी डिबिया को छाती या पीठ पर रखकर और दूसरे सिरे को कान में लगाकर कुछ पता करते हैं। यही यंत्र स्टेथोस्कोप कहलाता है। इससे हृदय की धड़कन और छाती की अन्य आवाजें सुनी जाती हैं।

तुम भी एक सरल स्टेथोस्कोप (डॉक्टरी आला) बना सकते हो।

यह सामग्री एकत्रित करो : एक कीप, 50 सेंटीमीटर लंबी रबर या प्लास्टिक ट्यूब, और एक गुब्बारा।



गुब्बारे को काटकर उसकी रबर को कीप के मुंह पर रबर बेंड या धागे की सहायता से कसकर बांध दो। अब कीप के निचले सिरे पर चित्र में दिखाए अनुसार ट्यूब को कस दो। स्टेथोस्कोप तैयार हो गया। स्टेथोस्कोप हमें कैसे मदद करता है इसके लिए एक सरल प्रयोग-

स्टेथोस्कोप मेज पर रख दो और अपने दोस्त से कहो कि वह उसके मुंह पर लगे रबर को हाथ से घिसे।



क्या तुम्हें कोई आवाज सुनाई दी?

अब रबर ट्यूब को अपने कान से लगा लो, और दोस्त से दोबारा रबर को घिसने के लिये कहो।

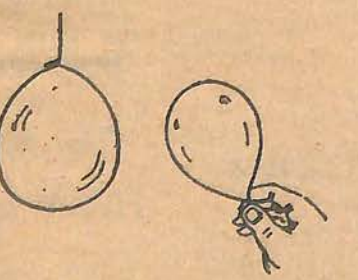
कुछ फर्क महसूस हुआ?

सीने पर लगाकर अपनी और अपने दोस्तों के हृदय की धड़कन सुनों, एक मिनट में हृदय कितनी बार धड़कता है, पता करो।

बिजली का आकर्षण और विकर्षण

यह प्रयोग दो चार्ज (आवेशित) गुब्बारों के निरीक्षण पर आधारित है। इस प्रयोग को सूखे मौसम में ही करना चाहिए, बरसात के दिनों में नहीं।

आवश्यक सामग्री : नायलोन या टेरीलीन कपड़े का टुकड़ा (शर्ट, पेंट, साड़ी आदि से भी काम चल सकता है), धागा और कुछ गुब्बारे।



दो गुब्बारों में हवा भरो। एक गुब्बारे को धागे से बांधकर लटका दो। अब एक दूसरे गुब्बारे को लटकाए गए गुब्बारे के पास लाओ। तुम देखोगे कि दोनों गुब्बारों के बीच कोई आकर्षण नहीं है।

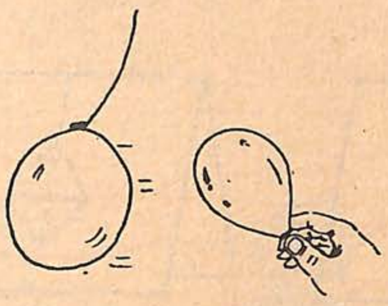
अब दूसरे गुब्बारे को नायलोन या टेरीलीन के कपड़े से रगड़ो, और उसके मुंह को दो उंगलियों से पकड़कर लटके हुए गुब्बारे के पास लाओ।

क्या लटका हुआ गुब्बारा दूसरे गुब्बारे की तरफ आकर्षित हो रहा है?

अब हाथ के गुब्बारे को दूर ले जाओ, लटका हुआ गुब्बारा भी पास आता जाएगा।

अब दोनों गुब्बारों को कपड़े से रगड़कर प्रयोग को दोहराओ।

इस बार क्या देखा?



लटका हुआ गुब्बारा दूर हट रहा है। अब लटके हुए गुब्बारे को घुमा दो, और जिस तरफ से उसे रगड़ा नहीं गया है उस भाग को सामने लाओ।

देखो क्या होता है?

प्रयोग को और भी रोचक बनाने के लिए एक गुब्बारे को कपड़े से रगड़कर मेज पर रखो। हां, अगर मेज स्टील की है तो उस पर अखबार बिछा लो फिर गुब्बारा रखो।

अब जल्दी से दूसरे गुब्बारे को रगड़ो और उसे मेज पर रखे गुब्बारे के पास लाओ।

एक गुब्बारे को नायलोन या टेरीकाट कपड़े से रगड़कर दीवार पर लगा दो। गुब्बारा चिपक जाएगा।

ऐसा क्यों?

घर्षण द्वारा स्थिर बिजली उत्पन्न होती है। एक जैसे आवेश में विकर्षण होता है; और विरोधी आवेशों में आकर्षण होता है।

अब समझने की कोशिश करो कि मोर के पंख को धीरे से रगड़ने पर उसके बाल (रेशे) बिखर क्यों जाते हैं?

तुमने क्या देखा?

कुछ और रोचक प्रयोग :- गुब्बारे को सीधा (खड़ा) लटकाकर उसके पास थर्मोकोल का टुकड़ा या ज्वार, मक्का का तना गुब्बारे से चिपका दो। अब एक गुब्बारे को रगड़कर लटके हुए धागे के पास लाओ। तुम देखोगे कि धागा गुब्बारे की ओर आकर्षित हो रहा है। धागा गुब्बारे से छूने पर दूर हो जाता है।



(दोनों प्रयोग, होमीभाभा, साइंस एजूकेशन सेंटर, बंबई के सौजन्य से)

घर में साबुन बनाओ

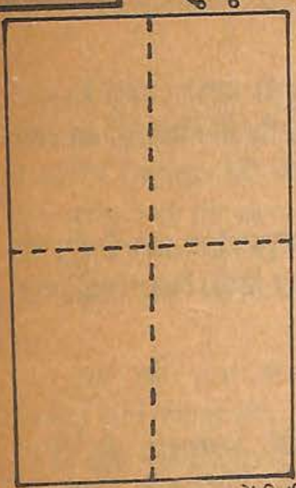
1. किराने की दुकान या कहीं और से 25 ग्राम कास्टिक सोड़ा (धोने या खाने का सोड़ा नहीं) लो। इसका दाम 30-35 पैसे होगा।
2. लगभग 250 मिलीलीटर तेल लो। यह तेल नारियल सोयाबीन या मूंगफली का हो। लेकिन सरसों या रेपसीड (अलसी) का नहीं हो।
3. एक कप पानी में थोड़ी सी हल्दी घोल लो।
4. एक गिलास को लगभग एक चौथाई पानी से भर लो। इसमें कास्टिक सोडा घोल लो। कास्टिक सोडा को हाथ से नहीं छूना- उससे जलन होगी।
5. इस गिलास में अब थोड़ा-थोड़ा करके तेल डालते जाओ और चम्मच से हिलाते जाओ।
6. 250 मिलीलीटर तेल पूरा डाल देने पर ऊपर से हल्दी का घोल डाल दो।
7. गिलास में इस घोल को 24 घंटे के लिए बिना हिलाए रहने दो।
8. 24 घंटे बाद गिलास में दो परतें दिखेंगी। ऊपर वाली परत साबुन है। एक पतले कपड़े से इसे छान लो और कपड़े में ही लटका दो ताकि सारा पानी निकल जाए।
9. साबुन को कपड़े से निकाल कर एक कटोरी में रखकर सूखने दो।

यह साबुन केवल कपड़े धोने के ही काम में लाना— इससे नहाना या हाथ-मुंह मत धोना।

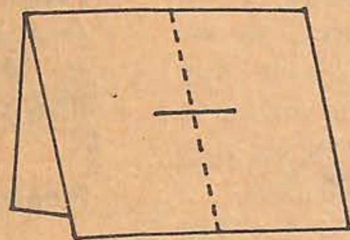
तुम्हारा यह प्रयोग कैसा रहा, हमें लिख कर बताना न भूलना।

साबुन बनाने की अन्य कोई विधि तुम्हें मालूम हो तो लिख भेजो।

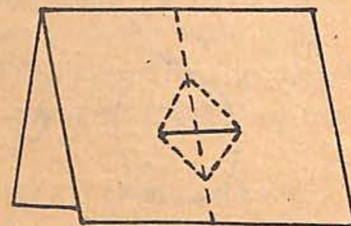
एक मजेदार खेल



1



2



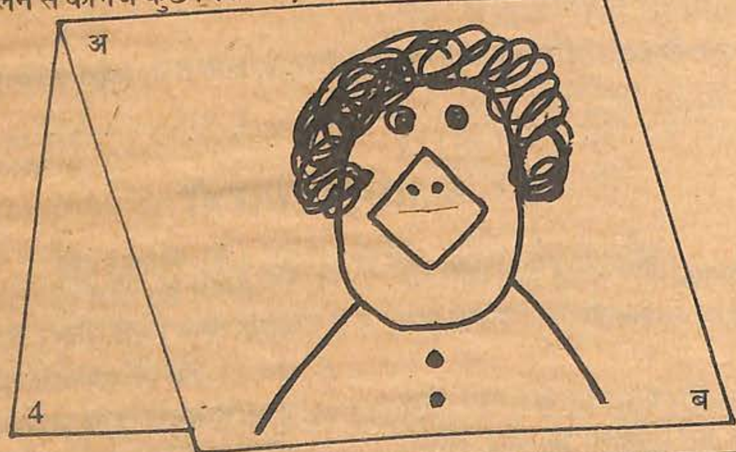
3

एक 12 × 7 सेंटीमीटर का मोटा कागज लो, अपनी कापी का भी चल सकता है। इसे चित्र-1 में दिखाई गई बिंदु लाइनों पर से मोड़ो। चित्र-2 में दिखाए अनुसार कागज को मोड़ने पर तुम्हारे पास दो बराबर भाग होंगे। इनमें से किसी एक भाग पर रेखांकित आड़ी लाइन खींचो। अब इसी हिस्से पर चित्र-3 के अनुसार आड़ी लाइन के ऊपर-नीचे बिंदु लाइनों का एक वर्ग बनाओ। वर्ग की इन बिंदु रेखाओं को बाल पेन से काफी मोटा कर दो, ताकि उतने हिस्से पर बार-बार बालपेन चलने से कागज कुछ घिस जाए। पर ध्यान रखना, कागज पूरी तरह कटे या फटे नहीं। इस वर्ग के बीचों-बीच रेखांकित आड़ी लाइन को ब्लेड से काटो।

लो, चित्र-4 की भांति तुम्हारा मुंह खोलता और मुंह बंद करता आदमी तैयार है। बस, थोड़ी-सी आदमी जैसी शक्ल पेन से बना दो, और कागज के **अ-ब** सिरे को खोलो-बंद करो। तुम देखोगे कि आदमी का मुंह खुलता है और बंद होता है।

मजा आया न?

□ दीपा, दिव्या और चारू अग्रवाल, भोपाल

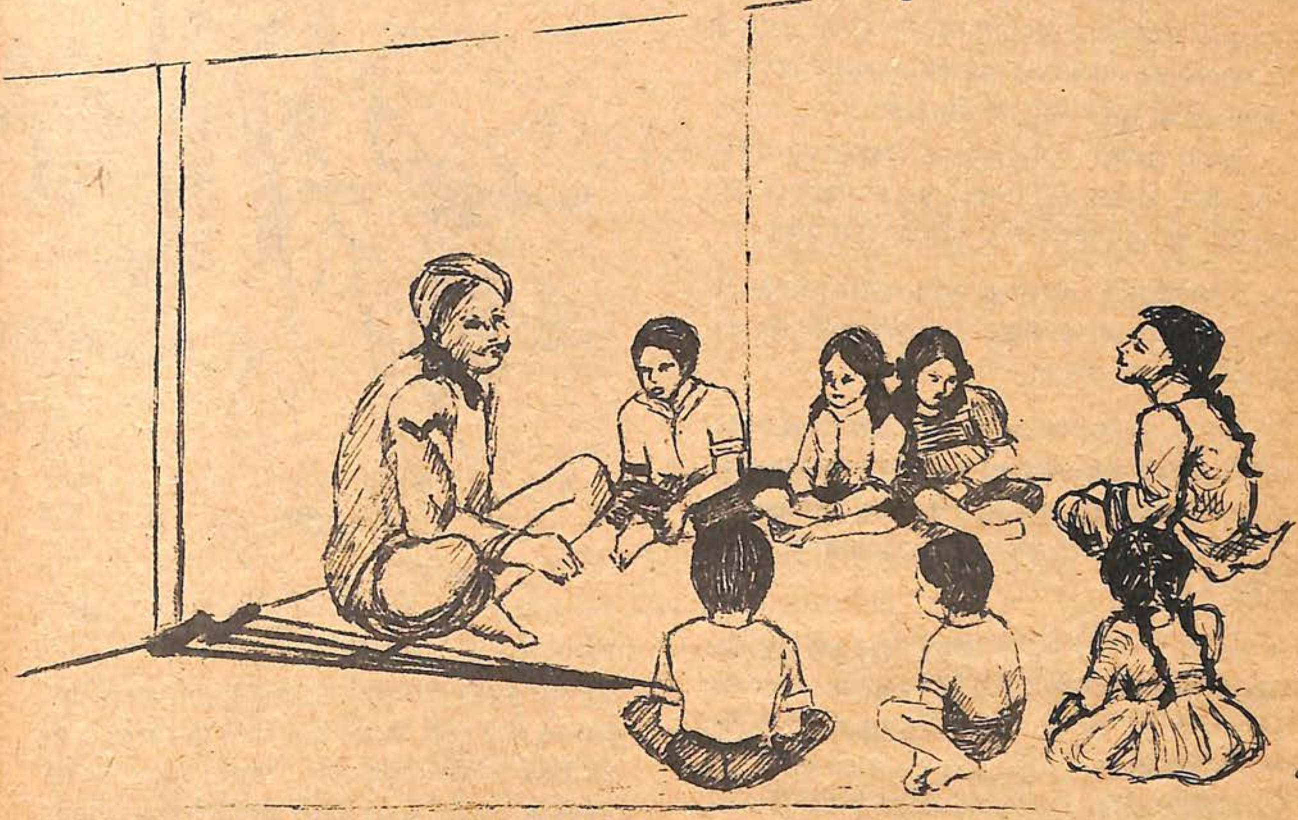


इन्होंने भी प्रतियोगिता में भाग लिया था :

अलका भारद्वाज, पांचवी, कर्वधा, **राजनांदगांव**। अंजू गुप्ता, सुधीर पाण्डेय, दसवीं, कन्हैयालाल मालवीय, आठवीं, **मंदसौर**। आठवीं, सुधा अजमेरा, आठवीं, आगर, **शाजापुर**। सुखूराम कोसारे, आठवीं, साल्हे, **बस्तर**। नीतेश श्रीवास्तव, खैरागढ़, **जिला** **रायगढ़**। जन्मेजय रजक, दसवीं, ढीमरखेड़ा, रजनी वर्मा, आठवीं, **जबलपुर**। कौशल सिंह, ग्यारहवीं, **उज्जैन**। जगदीश नखरिया, नवमीं, **गुना**। संतोष कुमार सिंह, नवमीं, **सीधी**। कल्पना कुमारी मिस्त्री, ग्यारहवी, चौरल, आशीष भट्ट, महू, **इंदौर**। जितेंद्र सोनी, कुक्षी, विनय पुराणिका, **धार**। जयराम पाल, दसवी, सीतापुर, **सरगुजा**। बृजेश ओझा, ग्यारहवीं, भगुवापुरा, **दतिया**। भुवनलाल साहू, कटघोरा, रवींद्र तिवारी, तखतपुर, **बिलासपुर**। राजेंद्र सिंह राठौर, **रतलाम**। रविशंकर मानिक, मोहनपुर, यशवंत देवांगन, गब्दी, **दुर्ग**। श्यामदास, मदनपुर, **रीवा**। तुलसीराम शुक्ल, राजीताल, **छतरपुर**। योगानंद चक्रधारी, कोपरा, राजेश देवांगन, मंदलोर, **रायपुर**। सुनील मालवीय, खट्टाली, **झाबुआ**। रश्मि भावसार, नरसिंहगढ़, **राजगढ़**। नीलेश माथकर, प्रभातपट्टन, **बैतूल**। माला सक्सेना, सुरेश कुमार, **भोपाल**।

कल्लू का सांप

□ हरिकृष्ण तैलंग



चित्र : आमांडा सरकार

हम कई दिनों से सोच रहे थे कि तुम लोगों के साथ सांप के बारे में कुछ बातचीत करें। अधिकांश बातें तो तुम लोग जानते ही होगे।

तैलंग जी हमारे दोस्त हैं। वे तुम्हारे लिए अच्छी और मजेदार कहानियां लिखते हैं। हमने उनसे कहा, क्यों न आप सांप पर एक कहानी लिखें। उन्होंने कहा, जरूर। और उन्होंने जो कहानी लिखी वह यह रही:

एक मुहल्ले में कल्लू उस्ताद रहते थे। उनकी विशेषता यह थी कि वे एक आंख से सारी दुनिया देखते और एक पांव से शहर भर की सड़कें नापते थे। यद्यपि बचपन में कल्लू की हालत ऐसी न थी लेकिन दूसरे महायुद्ध के समय वे फौज में भरती होकर मुहिम पर गए थे। वहीं उनको युद्ध देवता के लिए भेंट स्वरूप एक आंख और एक पैर चढ़ा देना पड़ा था। कल्लू उस्ताद की यह आदत पड़ गई थी कि जो आदमी उन्हें मिलता उससे दुआ सलाम के बाद अपनी बहादुरी का बखान करने लगते थे। वह आदमी चाहे कितनी जल्दी में क्यों न हो वे उसे तब तक न छोड़ते जब तक वह उनकी दो-चार घटनाओं का जिक्र न सुन लेता। इसलिए अक्सर लोग उनसे कतरा कर चलते। परंतु मुहल्ला भर के बच्चों के लिए तो कल्लू उस्ताद एक अच्छा खासा तमाशा थे। जिधर भी कल्लू [illegible]कलते आठ-दस लड़के उनके पीछे 'कल्लू लंगड़, कल्लू लंगड़' चिल्लाते हुए उनका पीछा करने लगते और जब तक कल्लू उन बच्चों को किसी जगह बैठाकर अपनी बहादुरी का कोई किस्सा सुना न देते तब तक उनका पिंड कोई न छोड़ता। सच पूछो तो कल्लू ने यह ढंग इसलिए निकाला था ताकि वहअपनी बहादुरी की डींग लोगों से हांक सके और यह बता सके कि कल्लू उस्ताद कोई मामूली आदमी नहीं बल्कि 'शेरे मुहल्ला' हैं।

एक दिन पप्पू, उच्ची, चीकू, बिनू और मीनू अपने बरामदे में बैठे हुए बातें कर रहे थे। बात यह थी कि उच्ची के घर पिछले दिन सांप का एक बच्चा निकला था। उस सांप के बच्चे को किसने पहले देखा, वह कैसा था और फिर वह कैसे मारा गया, यही बातें वह बता रहा था कि 'कल्लू लंगड़, कल्लू लंगड़' की आवाजें उन्हें सुनाई दीं। उठ कर देखा तो कल्लू उस्ताद

अपनी बैसाखी पर उचकते हुए चले आते दिखे। पीछे-पीछे चार-छः लड़के चिल्लाते हुए चले आ रहे थे। यह देखते ही ये लोग भी कल्लू उस्ताद के पास जा पहुंचे और उन्हें लेकर फिर बरामदे में आ बैठे। पप्पू ने सब लड़कों को शांत रहने को कहकर कल्लू से पूछा, "चाचा, कभी तुमने सांप भी मारा है?"

कल्लू उस्ताद ने यह सुना तो खुश होकर बोले, "अरे, कल्लू ने क्या नहीं किया? जंग के मैदान में जब बड़े-बड़ों को धूल चटाई है तो सांप की क्या बिसात?"

पप्पू बोला, "तो चाचा, सांप से पाला पड़ने की कोई घटना सुनाओ न आज, लड़ाई की बड़ाई तो तुम कई बार बखान चुके हो।"

कल्लू उस्ताद ने उनकी ओर अपनी गर्दन को काफी घुमाकर देखा और बोले, "अच्छा तो तुम लोग सुनना ही चाहते हो। सब लोग एक घेरा बनाकर बैठ जाओ। बड़ा दिलचस्प किस्सा है यह। बात भी काफी पुरानी है।"

सभी बच्चे कल्लू के सामने घेरा बनाकर बैठ गए। सबने अपने कान उनकी ओर लगा दिए। मीनू जो सबसे छोटी थी बिनू से सट कर बैठ गई जैसे सांप का किस्सा नहीं बल्कि सचमुच सांप ही सामने आने वाला हो। कल्लू ने कहना शुरू किया, "यह तो मैं बता ही चुका हूं कि बात को बीते हुए बहुत वर्ष हो चुके हैं। मेरी उम्र 9-10 वर्ष की होगी तभी एक भयंकर काले सांप से साबका पड़ा था मेरा।" पप्पू और उच्ची और साफ सुनने के लिए जरा नजदीक सरक आए। पप्पू ने पूछा, "क्या काला भुजंग था वह?"

कल्लू बोले, "हां, हां, एकदम काला और लंबा इतना जितने ये मेरे दोनों हाथ," और कल्लू ने अपने दोनों हाथ आजू-बाजू फैलाकर बता दिए।

मीनू ने पूछा, "चाचा जहर वाला था क्या?"

कल्लू बोले, "हां, जहर वाला था।"

चीकू बोला, "तुम्हें कैसे पता?"

कल्लू ने घूरकर चीकू को देखा और बोले, "कह दिया ना, था।"

अब सभी बच्चों की उत्सुकता बढ़ गई। सभी ध्यान लगाकर सुनने लगे। बिनू ने कहा, "भाई, अब कोई बीच में मत टोकना। हां, चाचा फिर क्या हुआ?"

कल्लू बोला, "हां, तो बात यह हुई कि मेरी मां बहुत दिनों से मेरे पिता से अपने पिता के यहां अर्थात मेरे नाना के यहां जाने को लगी रहती थीं। लेकिन मेरे पिता



एक ऐसे दफ्तर में बाबू थे जहां खूब काम रहता था। इसलिए उन्हें छुट्टी ही नहीं मिल पाती थी जिससे वे मां को लेकर उनके मायके जाएं।" इतना सुनना था कि उच्ची बोल पड़ा, "कल्लू चाचा, सांप और तुम्हारे नाना से क्या संबंध? अरे सांप की बात सुनाओ न।"

कल्लू ने अपनी एक आंख मटकाई और बोला, "यही तो तुम्हारी खराब आदत है। बीच में टोक देते हो। घटना की शुरूआत तो यहीं से होती है। भला उसका छोर कैसे छोड़ दूं?" यह कहकर कल्लू ने फिर सिलसिला छेड़ा, "हां, तो आखिर किसी तरह मेरे पिता को एक हफ्ते की छुट्टी मंजूर हुई और हम लोगों ने जाने की तैयारी आरंभ की। मां तो बड़ी खुश हुईं। मैं भी कम खुश नहीं था। इधर-उधर दोस्तों से ननसाल जाने की बात कहता फिरता था। मेरे लिए नए जूते और कपड़े बनवाए गए। मां ने भी कई धोतियां खरीदीं। आखिर यात्रा का दिन आ गया। स्टेशन जाने के लिए पिताजी ने मुझसे तांगा लाने को कहा। मैं तांगा ले आया। उस तांगा का घोड़ा जैसा मरियल था उससे कहीं ज्यादा वह अड़ियल निकला। रास्ते में कई जगह उसने सत्याग्रह किया। एक बार तो वह खुली सड़क पर दंडवत करने ही लेट गया। तांगे वाले ने कितने ही हंटर उसे चिपकाए लेकिन वह टस से मस न हुआ। हम सब लोग जब उतरे तब कहीं वह उठा। जैसे-तैसे स्टेशन पहुंचे। गाड़ी आने को पांच-सात मिनट ही शेष थे। प्लेटफार्म पर बड़ी

भीड़ थी उस समय इलाहाबाद का कुंभ मेला चल रहा था इसलिए.....।"

उच्ची ने सोचा अब कल्लू के साथ कुंभ के मेले में न चलना पड़े इसलिए वह बोल पड़ा, "चाचा, तुम कहां की सुना रहे हो? सांप कहां मिला वह सुनाओ न।"

कल्लू नाराज होकर बोले, "भाई, तुमने फिर टोक दिया। अभी मैं ननसाल भी तो नहीं पहुंचा। सांप कहां से आ जाएगा? वह जहां आया था वह जगह मैं अपने आप बता दूंगा। हां, तो ध्यान से सुनो।"

सब बच्चे फिर कान लगाकर सुनने लगे। कल्लू ने फिर कहना शुरू किया, "मेरे पिताजी टिकट लेकर आए ही थे कि धड़धड़ाती हुई गाड़ी भी आ गई। चारों ओर चिल्ल-पों मच गई। लोग अपना-अपना सामान लेकर डिब्बों में घुसने-भागने लगे। जो डिब्बा हमारे सामने आ गया था उसी में पिताजी सामान रखने की कोशिश करने लगे। जैसे-तैसे सामान अंदर ठूंसा गया और फिर हम सब भी ठुंस गए। डिब्बे में तिल रखने की भी जगह न थी। हालांकि दो सीटें ऐसी थी जिन पर केवल दो आदमियों ने ही कब्जा जमा रखा था। वे उन पर ऐसे लुढ़के पड़े थे जैसे लकड़ी के दो मोटे लट्ठे पड़े हों। इतना हो हल्ला और धमाचौकड़ी भी उनकी नींद न खोल सकी। शायद वे जगह छिनने के भय से गुपचुप रहे हों। जैसे-तैसे हम लोगों ने अपनी पेटियां और बिस्तरे जमा कर बैठने लायक जगह बनाई। इतने में ही गाड़ी ने सीटी दी और वह प्लेट फार्म से सरकी।"

बिनू को कल्लू का यह यात्रा-वर्णन शायद अच्छा नहीं लग रहा था।इसलिए उसने टोका,"अभी तो चाचा गाड़ी ही सरकी है। ननसाल पहुंचने में अभी कितने घंटे और लगेंगे? तुम तो ननसाल जाने के बाद से ही सुनाना शुरू करो। शायद सांप वाली घटना जल्दी आ जाए।"

उसकी इस बात का समर्थन छोटी मीनू ने 'हां चाचा' कह कर किया। किंतु कल्लू बोले, "भाई, सफर की बातें बड़ी मजेदार हैं। उन्हें छोड़ देने से बात का वजन कम हो जावेगा। लेकिन तुम लोगों की जल्दबाजी से ननसाल में जो मजे उड़ाए थे उन्हें बताना तो नहीं छोड़ूंगा। अच्छा, तो जैसे-तैसे ननसाल पहुंचे। हमें देख नाना-नानी बड़े खुश हुए। तरह-तरह के पकवान हमारे स्वागत में बनवाए गए। मुहल्ले भर की स्त्रियां मेरी मां से रोज मिलने आती थीं। वे मेरा खूब लाड़-प्यार करतीं और कोई न कोई चीज मुझे दे जातीं। खूब कपड़े और खिलौने मेरे पास इकट्ठे हो गए। मेरी नानी का वह मीठा लाड़ तो अब भी याद आता है।नानी के कहने से एक जलेबी वाला ताजी रस भरी जलेबियों का एक दोना रोज सबेरे मुझे दे जाया करता था। उनके घर के पिछवाड़े मीठे अमरूदों के कई झाड़ लगे थे जिन्हें मैं रोज तोड़-तोड़कर खाया करता। इसी तरह मजे से दिन बीत रहे थे कि पिताजी की छुट्टियां समाप्त हो गईं और एक दिन मुझे नाना-नानी का वह मधुर प्यार, मीठे अमरूद और रसभरी जलेबियां छोड़कर घर वापिस चल देना पड़ा।"

उच्ची अब काफी उकताहट अनुभव कर रहा था, इसलिए बोल पड़ा, "तो चाचा तुम ननसाल से वापिस भी हो गए। लेकिन सांप अभी तुम्हें मिला ही नहीं। तुम यह सब बंदकर सांप से मुठभेड़ की घटना पर आओ न।"

कल्लू बोले, "बड़े जल्दबाज हो तुम उच्ची। तुम्हारी इस आदत से कितनी और बातें मुझे छोड़ देनी पड़ी हैं। बस अब वही घटना तो आने वाली है जिसका तुम सबको इंतजार है। जरा सब्र रखकर सुनना शुरू करो।"

छोटी मीनू जो इस दौरान अपने आप बिनू से सरक कर बैठ गई थी। सांप का नाम सुनकर फिर सटकर बैठ गई।

कल्लू ने कहना शुरू किया, "वापिस होते समय मेरी मां की जैसी बिदाई हुई तथा जो मजे व तकलीफें रास्ते में उठाईं उन सबका वर्णन तो अब मैं नहीं करूंगा क्योंकि मैं स्वयं जल्दी में हूं। तो हम लोग अपने शहर के रेल्वे स्टेशन पर जब उतरे तो वही तांगा वाला फिर मिल गया। उसके अजगर गति घोड़े वाले तांगे का आनंद तो हम उठा ही चुके थे अतः उसको छोड़ दूसरा तांगा लिया। अब असली घटना घटने के स्थान तक हम आ पहुंचे हैं। सब सावधानी से सुनने में अपने कानों को लगाए रखना। कहीं ऐसा न हो कि मुझे कोई बात दुबारा बताना पड़े। मैं बात दुहराना और बढ़ा-चढ़ा कर बताना समय की बर्बादी समझता हूं।"

सब बच्चे और नजदीक सरक आए। कल्लू ने खांस कर कहना जारी किया, "जैसे ही हमारा तांगा घर के सामने रुका कि उसकी आवाजें सुन हमारे पड़ोसी छन्नू दादा घर से निकले। उन्होंने हम लोगों को तांगे से उतरते देखा तो पूछा, 'क्या कल्लू के बाप, वापिस आ रहे हो?' उनका यह सवाल मुझे अटपटा लगा सो मैंने कहा, 'दादा, बुढ़ापे में क्या तुम्हारी नजर भी नदारत हो गई है जो हमारे आने की बात पूछते हो?' छन्नू दादा अपने को बूढ़ा सुनना कतई पसंद न करते थे। इसलिए

तिनक कर बोले,'कल्लू के बाप सुनी कल्लू की बात? यह लड़का बड़ों का कोई लिहाज नहीं करता। कैसा जवाब देता है।?' इस पर मेरे पिताजी ने मुझे डांटा और बोले, 'हां, दादा अभी चले आ रहे हैं। सब खैरियत है न?' छन्नू दादा ने कहा, 'भैया और सब तो ठीक है लेकिन आज सबेरे तुम्हारी घर की मोरी में से एक सांप अंदर घुसते दिखा था। जरा सावधानी से अंदर जाना।

अब सांप अंदर घुसा है, यह सुनकर सब बच्चे चौकन्ने हो गए। सभी सोचने लगे, 'देखें, कल्लू चाचा सांप से कैसे निपटते हैं।' कल्लू कहे जा रहे थे,"जैसे ही सांप का नाम सुना पिता जी डर कर बोले, 'क्या कहा दादा, घर में सांप घुसते देखा। कब की बात है? कितना बड़ा और कैसा सांप था वह?' इतने सवाल सुन छन्नू दादा ने उत्तर दिया, 'भइया, मैं सबेरे अपने घर जा रहा था कि तुम्हारी मोरी की ओर नजर गई। देखा तो काली-काली कोई चीज लहराती हुई अंदर घुस रही थी। वह सांप की पूंछ थी जो लगभग एक हाथ लंबी थी। हो सकता है 3-4 हाथ अंदर वह पहले ही सरक चुका हो। अच्छा हो पहले तुम दो-चार जनों को बुलाकर घर अच्छी तरह देख लो। बाल-बच्चों वाला घर है। शंका मिटा लेना ही अच्छा।' यह सुनकर पिताजी ने मुझसे कहा, 'कल्लू तू जाकर लोगों को बुलाकर ला मैं तब तक ताला खोलता हूं। और हां, लोगों से लाठी लेकर चलने को कहना।' मैं भागा-भागा दो-चार जनों को बुला लाया। सबने लाठियां अपने-अपने हाथों में ले रखी थीं। मैं भी एक लाठी लिए था। सोचता था अगर सांप मुझे कहीं दिखा तो दो ही हाथ में उसे स्वर्ग भेज दूंगा। सामने का कमरा पूरा खोज डाला गया लेकिन सांप कहीं नजर न आया। पिताजी ने राय दी, 'मोरी ही के पास क्यों न देखा जाए। शायद वहीं कहीं हो।' सब लोग सावधानी से मोरी की ओर बढ़े। मोरी के पास आकर देखा तो सब चौंक पड़े। बगल में ही चार-पांच हाथ लंबा काला सांप पड़ा हुआ था। लेकिन वह हिला डुला नहीं। शायद उसे हम यमदूतों के आने की खबर ही नहीं हुई। उसे देख सभी आदमी मारे डर के पीछे हट गए। लेकिन मैंने हिम्मत बांध कर उस पर अपनी लाठी का वार कर ही दिया। 'अरे! यह क्या वह तो हिला-डुला भी नहीं। और तभी असलियत हम सबको मालूम पड़ी। असल में वह सांप नहीं बल्कि कीचड़ में लिपटा मोटी रस्सी का टुकड़ा था। शायद कोई बिल्ली उसे मोरी के रास्ते लाई होगी। उसी का लहराता छोर देखकर छन्नू दादा को सांप का भ्रम पैदा हो गया था। यही वह अवसर था जब मुझे सांप मारने का बढ़िया मौका हाथ आया था लेकिन मेरी बहादुरी के आगे वह



सांप रस्सी बन गया। अगर सचमुच वह सांप होता तो मैं उसे ऐसा मारता, ऐसा मारता कि....." यह कह जैसे ही कल्लू ने अपनी बैसाखी की ओर हाथ बढ़ाया कि वह हाथ न आई। उस ओर घूम कर देखा तो उच्ची दूर खड़ा बैसाखी लिए कह रहा था, "कल्लू चाचा, पहले सांप निकालो तब कहीं बैसाखी दूंगा। दो घंटे से इधर-उधर की सुना रहे हो और जब सांप की बात आई तो उसकी जगह निकली रस्सी।"

यह सुनकर कल्लू ने कहा, "अरे सांप कहां से निकालूं मैं? जब सांप था ही नहीं तो क्या मैं रस्सी को सांप बना देता? लाओ मेरी बैसाखी, मुझे काम पर जाना है।"

लेकिन उच्ची ने बैसाखी न दी। वह सांप निकालने की हठ पर अड़ा रहा।

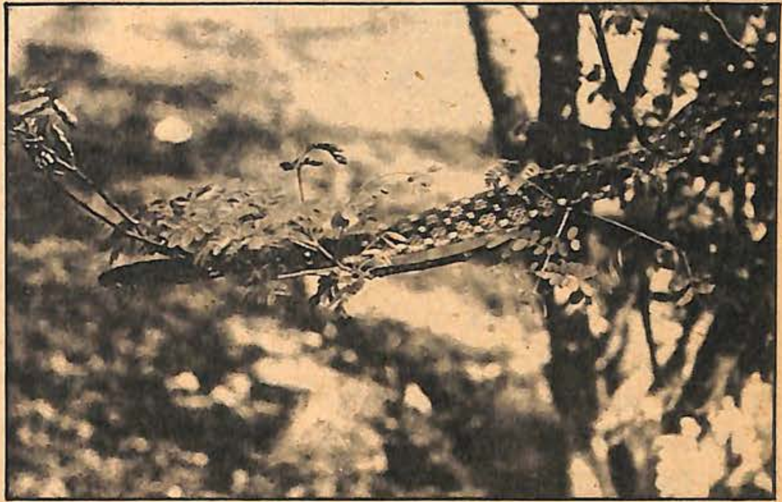
इसी प्रकार चिल्ल पौं मची हुई थी कि उच्ची के पिता वहां से निकले। घटना सुनकर उन्होंने उच्ची को डांटकर कहा, "उच्ची बैसाखी वापिस कर दो। कल्लू की तो आदत ही बात का बतंगड़ बनाने की है।" उच्ची ने डर कर बैसाखी दे दी, पर कुछ लड़के चिल्ला पड़े, "कल्लू चाचा लंगड़, बात का बतंगड ।"

तब से अब हमेशा कल्लू उस्ताद के पीछे लड़कों का एक हजूम यही चिल्लाता हुआ चला करता है।

● ● ●

कहानी पढ़ी। पर कल्लू तो सिर्फ रस्सी का सांप ही बनाते रहे, सांप के बारे में कुछ बताया ही नहीं। हमने सोचा चलो किसी ऐसे व्यक्ति के पास चलते हैं, जो कल्लू की तरह बतंगड़ न हो बल्कि जनगड़ (यानी जानने वाला) हो। बस, एक दिन शर्माजी हमारे लपेटे में आ गए। शर्मा जी ने सांप के बारे में केवल पढ़ा ही नहीं बल्कि देखा भी है। उनसे सांप की बात की, तो उन्होंने यह सब लिख डाला:

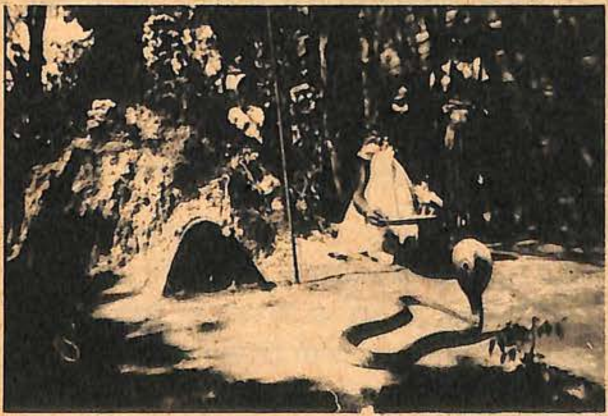
सांपों का संसार



□ कालूराम शर्मा

कहानी में तुमने देखा सांप का नाम सुनते ही कैसे उच्ची, मीनू, बिनू आदि कल्लू के चारों तरफ घेरा मारकर बैठ गए। वास्तव में सांप है ही कुछ ऐसा जंतु कि उसका नाम लेते ही सरसरी-सी दौड़ जाती है। भले ही वह सांप विषैला हो अथवा नहीं। आखिर हम इनसे इतना डरते क्यों हैं? इनसे डरने का सबसे बड़ा कारण शायद सांपों के बारे में तरह-तरह की किवदंतियां हैं। तो आओ, आज हम सांपों के बारे में अन्य जानकारी के साथ-साथ यह भी देखते हैं कि ये किवदंतियां कितनी सच हैं और कितनी झूठ!

भारत में आज भी कई नाग मंदिर बने हुए हैं। जहां नाग की पूजा होती है। प्राचीन ग्रंथों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि प्रतिवर्ष नाग के काटने से कई मौतें हो जाती हैं, इसलिए नागपंचमी पर नाग की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि नाग की पूजा करने से नाग काटता नहीं है। भारत की कई आदिवासी जातियां



सांपों को मारती नहीं हैं, बल्कि वे सांपों को दूध पीने के लिए आमंत्रित करती हैं।

पृथ्वी के उत्तरी क्षेत्र (आर्कटिक) एवं न्यूजीलैंड देश को छोड़कर संसार के लगभग सभी हिस्सों में अलग-अलग जाति के सांप पाए जाते हैं। संसार में सांपों की लगभग 2500 जातियां पाई जाती हैं, जिनमें से मात्र 216 जातियां ही विषैली हैं। हमारे देश में लगभग 200 प्रकार के सांप पाए जाते हैं। इनमें से केवल 50 प्रकार के सांप विषैले होते हैं। लेकिन इन 50 प्रकार के **विषैले सांपों में से तीन ही ऐसे हैं जिनके काटने से मनुष्य की मृत्यु हो सकती है**। इनके बारे में हम स्वास्थ्य के स्तंभ में बात करेंगे।

लगभग पचास लाख वर्ष पूर्व सांप बिलकुल छिपकली के समान थे और जमीन पर ही रेंगते रहते थे। किंतु जब इनको बिलों, वृक्ष की शाखाओं तथा संकरी जगहों पर रहने की जरूरत पड़ी तब इनका शरीर बेलनाकार होता गया और पैर धीरे-धीरे लुप्त हो गए। हां, इनके शरीर की बनावट में जो बदलाव आया वह एकदम दो-चार सालों में नहीं हुआ, बल्कि इसमें हजारों साल लगे। यदि तुम्हें किसी चिड़िया घर या सपेरे के पास अजगर देखने का मौका मिले तो उसके शरीर के पिछले हिस्से के बाजू में देखो, पिछले पैरों के अवशेष दिखाई देंगे।

सांप समुद्र में 100 मीटर की गहराई तक और समुद्री सतह से 5,000 मीटर की ऊंचाई पर भी मिलते हैं। समुद्र में रहने वाले सांप लगभग पांच घंटे तक पानी में



रह सकते हैं। जमीन पर रहने वाले सांप बिल और वृक्ष की दरारों में रहते हैं। यही नहीं सांप वृक्ष की शाखाओं, पत्थरों के नीचे, नदी, तालाब, बावड़ी और झीलों में भी अपना अड्डा जमाते हैं। क्या तुम जानते हो कि बिलों में रहने वाले सांप खुद बिल नहीं बनाते हैं। बल्कि ये दूसरे जानवरों जैसे चूहे, खरगोश आदि पर हमला करके उनके बिलों में रहना शुरू कर देते हैं। जमीन पर रहने वाले सभी सांप तैरने में माहिर होते हैं।

ध्यान से देखने पर सांप के शरीर पर शल्क का आवरण दिखाई देता है। शल्कों के इस आवरण से सांप के शरीर की रक्षा होती है। प्रत्येक जाति के सांप के शल्क एक विशेष आकृति तथा क्रम में रहते हैं। सांप के बाहरी शरीर को देखकर हम बता सकते हैं कि वह विषैला है या नहीं। यह थोड़ा मुश्किल काम है । सांप के सिर के हिस्से में शल्कों को देखकर यह पहचाना जा सकता है। पीठ की अपेक्षा पेट की तरफ के शल्क ज्यादा बड़े तथा चौड़े होते हैं। इसकी वजह से कुछ लोग सांप को खंडित शरीर वाला समझते हैं। शल्कों की बनावट हमेशा एक-सी ही होती है। सांप को शल्क के आधार पर पहचानने के बारे में जानकारी अगले अंक में देंगे।

सांप की केंचुली के बारे में भी तुमने सुना ही होगा। और तुममें से कई अपनी किताब में रखते होगे। सांप अपने जीवन काल में कई बार केंचुली बदलता है। सांप के लिए केंचुली बदलना ठीक वैसा ही है जैसे पेड़ अपने पत्ते पक्षी अपने पर या फिर तुम अपने पुराने कपड़े बदलते हो। सभी प्राणियों की त्वचा के नीचे निरंतर नई कोशिकाएं बनती रहती हैं। ये पुरानी कोशिकाओं को ऊपर की तरफ धकेलती रहती हैं। सांप में पुरानी कोशिकाएं मृत होकर कठोर चमड़ी का आवरण बन जाती हैं। इसे ही सांप केंचुली के रूप में शरीर से उतारता है। केंचुली बदलते समय सांप सुस्त हो जाता है। उसे साफ-साफ दिखाई भी नहीं देता, क्योंकि उसकी आंखों पर भी इन्हीं मृत कोशिकाओं की परत चढ़ जाती है। केंचुली बदलने का तरीका भी बहुत मजेदार है। यह अपने मुंह को किसी खुरदरी जगह से रगड़ता है, इससे होठों के पास की चमड़ी ढीली हो जाती है। उसे सांप पत्थर या किसी पेड़ की टहनी से अटका देता है। अब सांप अपने शरीर को सिकोड़कर चमड़ी से बाहर निकाल लेता है। केंचुली बदलने की प्रक्रिया में केंचुली का अंदर वाला भाग बाहर एवं बाहर वाला भाग अंदर चला जाता है। कम उम्र में सांप जल्दी-जल्दी केंचुली बदलता है, जबकि अधिक उम्र होने पर काफी समय बाद। सोचो ऐसा क्यों?

अगर सांप की दाढ़ी-मूंछ होती तो वे कैसे लगते? शायद तुम में से कुछ लोग कहें कि सांप की दाढ़ी-मूंछ होती है, ऐसा सुना है। पर वास्तव में सांप के जीवन की किसी भी अवस्था में कहीं भी बाल नहीं होते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि सांप जब केंचुली बदलता है तो केंचुली का कुछ भाग मुंह के आसपास अटका रह जाता है, जो दाढ़ी-मूंछ जैसा प्रतीत होता है। कभी-कभी सपेरे भी सांप के मुंह के आसपास नकली बाल चिपकाकर ले आते हैं।



कभी तुमने सांप को भोजन करते देखा है? क्या खाता है सांप! कीड़े-मकोड़े, मेंढक, गिलहरी, छिपकली, चूहे आदि इसका प्रिय भोजन हैं। हां, कभी-कभी ये खरगोश, सुअर जैसे बड़े जानवरों का शिकार भी कर लेते हैं। सांप की खोपड़ी की हड्डियां एक-दूसरे से लचीले तंतुओं से जुड़ी रहती हैं। इससे जैसे ही खोपड़ी ही हड्डियां फैलती हैं तो निचला जबड़ा नीचे लटक जाता है और मुंह इतना चौड़ा हो जाता है कि सांप अपने शिकार को मुंह में ले सके।

पहले से मरे हुए प्राणी को सांप छूते भी नहीं हैं। लेकिन दोनों ही तरह के सांप, यानि विषैले और बिना विष के, अपने शिकार को मारकर या बेहोश करके खाते हैं। विषैला सांप अपने शिकार में विष प्रवाहित कर देता है इससे शिकार बेहोश हो जाता है। विषहीन



सांप अपने शिकार के चारों ओर लिपट जाता है। और पूरी ताकत से दबाता है। इससे शिकार बेहोश जाता है। एक मजेदार बात यह है कि सांप हमारी तरह अपना भोजन चबा-चबा कर नहीं करता, हालांकि उसके दांत होते हैं। दांतों का उपयोग भोजन को निगलते समय पकड़े रहने के लिए किया जाता है।

हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि सांप दूध पीते हैं और कई बार गाय, भैंसों के पैरों में लिपटकर थनों से सारा दूध पी जाते हैं। सपेरा भी जब सांप लेकर आता है तो आवाज लगाता है, 'सांप को दूध पिलाओ।'

सच, बात यह है कि दूध सांप का प्राकृतिक भोजन नहीं है। लेकिन कभी-कभी सांप को दो-तीन दिन तक प्यासा रखने पर वह थोड़ा-सा दूध पी लेते हैं।

सांप कभी-कभी पक्षियों के अंडों को फोड़कर खा जाते हैं। ऐसी मान्यता भी है कि सांप अपने अंडों को ही खा जाता है, कुछ हद तक यह सच भी है। आमतौर पर



बड़े सांप , छोटे सांपों को अपना भोजन बना लेते हैं।

तुमने नाग को बीन की आवाज पर नाचते देखा होगा। **अगर हम कहें कि सांप के बाहरी कान नहीं होते हैं, तो तुम विश्वास करोगे? पर सच्चाई यही है।** तुमने यह दोहा भी सुना ही होगा-

विधना जिए जानिके, शेषहि दिए न कान।
धरा मेरू सब डोलिहैं, सुन तानसेन की तान।।

फिर नाग बीन की आवाज पर नाचता क्यों है? असल में नाग बीन से अपना बचाव करता है। उसे लगता है कि बीन उस पर हमला करने वाली है या नुकसान पहुंचा सकती है। अगर एक सामान्य लकड़ी लेकर बीन की तरह घुमाई जाए तब भी नाग उसी तरह इधर-उधर डोलेगा। एक और मजेदार बात कि नाग को छोड़कर अन्य कोई सांप बीन या लकड़ी को इस तरह हिलाने पर इधर-उधर नहीं डोलता है। पर हां, सभी सांपों के कान नहीं होते हैं।





ऐसा नहीं है कि सांप के कान नहीं होने से उसे कुछ पता नहीं चलता। सांप सुनता है पर अलग तरीके से। वैज्ञानिकों का मत है कि किसी भी प्रकार की आवाज का कंपन जमीन के सहारे सांप के निचले जबड़ों तक पहुंचता है और वहां से विशेष तंत्रिकाओं द्वारा मस्तिष्क तक पहुंचता है। यदि सांप, फन जमीन से ऊपर उठाए बैठा हो तो वह किसी भी प्रकार की आवाज नहीं सुन सकता। इसीलिए तुमने देखा होगा कि कई बार सांप को भगाने के लिए लोग जमीन पर लाठी से ठक....ठक.....करते हैं। सांप की जीभ भी उसे बहुत सारी खबर देती है। सांप लगातार अपनी जीभ को मुंह से अंदर-बाहर करता रहता है। इसके लिए उसे अपना मुंह खोलना नहीं पड़ता,बल्कि मुंह के आगे बने छेदों सेजीभ बाहर निकलती है। तुम्हें लगता होगा कि दो जीभ हैं। पर जीभ एक ही होती है, बीच से चिरी हुई। यह जीभ राह में आने वाली छोटी से छोटी वस्तुओं के बारे में जानकारी देती है। हवा में कोई गंध हो तो उसका अनुभव भी यह जीभ कर लेती है। जब सांप मार्ग में खाने की कोई चीज पाता है तो वह अपनी जीभ से टटोलकर ही तय करता है कि वह खाने योग्य है या नहीं।

हमारे देश में सांप बरसात के मौसम में ही आमतौर पर दिखाई देते हैं। अक्टूबर से दिसंबर तक तो वे बिलों में ही रहते हैं। मेंढक की तरह सांप भी ठंड के दिनों में अपने बिलों में घुसकर महीनों तक निष्क्रिय पड़े रहते हैं। ऐसी स्थिति में सांप की सभी जैविक क्रियाएं धीमी हो जाती हैं।शरीर का तापमान 10^0 सेंटीग्रेड या उससे भी कम हो जाता है। शरीर में ऑक्सीजन की आवश्यकता कम हो जाती है। हृदय की धड़कन,नाड़ी की गति तथा रक्त का संचार बहुत कम हो जाता है। शरीर में एकत्रित चर्बी खत्म होने लगती है।इसी चर्बी से सांप को ऊर्जा मिलती है। वजन भी घट जाता है।

ऐसी मान्यता है कि सांप उड़ते भी हैं। वास्तव में सांप उड़ते तो नहीं हैं, लेकिन कुछ ज़ातियों के सांप वृक्षों पर लंबी छलांग लगाते हैं, तो ऐसा लगता है कि वे उड़ रहे हैं।





सांप कितने साल जिंदा रहते हैं? इसके बारे में कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। कुछ चिड़ियाघरों में विशषज्ञों ने सांप पालकर पता लगाया है कि सांप आमतौर पर 10 से 40 वर्ष तक जिंदा रह सकते हैं। अलग-अलग सांपों की उम्र में काफी अंतर है, जैसे भारतीय अजगर 34 वर्ष, नाग 21 वर्ष, घोड़ा पछाड़ (धामन) 10 वर्ष तक जिंदा रह सकते हैं।

जिस सांप से हम इतना डरते हैं उस बेचारे का क्या हाल होता है,यह जानते हो?जैसे सांप दूसरे प्राणियों को अपना भोजन बनाता है ऐसे ही उसे भी कुछ अन्य प्राणी अपना भोजन बना लेते हैं। कई शिकारी पक्षी, नेवला आदि सांपों तथा उनके अंडों को खा जाते हैं। पर सांप का सबसे बड़ा दुश्मन है–मनुष्य। मनुष्य जहां एक ओर भय के कारण सांप की हत्या करता है वहीं दूसरी ओर



अपने स्वार्थ के लिए भी उसे मारता है। सांप की चमड़ी निकालकर उससे बटुए, बेल्ट, सूटकेस, कवर, जूते आदि बनाए जाते हैं। यह समझने की बात है कि सांप के शरीर पर चमड़ी ज्यादा सुंदर दिखती है न कि उससे बनाई गई अन्य वस्तुओं पर।

सांप प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कई तरह के कीड़े-मकोड़े जो फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं—सांप का प्रिय भोजन हैं। चूहे हमारे देश का लगभग 28% अनाज प्रतिवर्ष खा जाते हैं। इन चूहों को भी सांप अपना आहार बनाते हैं। इस तरह कह सकते हैं कि सांप हमारी फसलों की रक्षा करता है।



(इस अंक में सांप के सभी छायाचित्र वर्ल्डवाइल्ड लाइफ फंड (इंडिया) के सौजन्य से)

हां भई, तैलंग जी की प्रस्तुति में जो मजा था वह एक वैज्ञानिक शर्मा जी की प्रस्तुति से फर्क है। सांप के बारे में तुम भी बहुत कुछ जानते और देखते हो। क्यों न अपनी मजेदार भाषा में लिखकर चकमक में भेज दो। सांप से संबंधित कोई भी घटना, जानकारी या अन्य बात भी हो सकती है। हम उसे भी यहां प्रकाशित करेंगे।



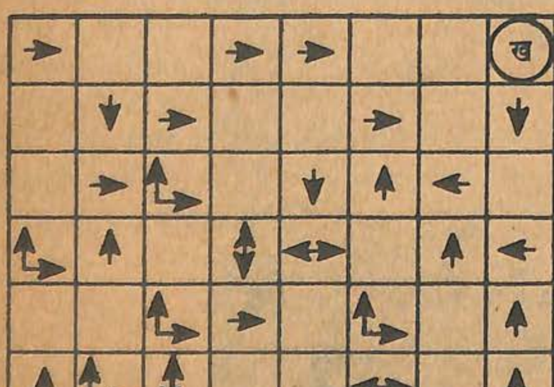
माथापच्ची

(1)

एक आदमी ने एक टोप, बरसाती और एक जोड़े जूते खरीदे। इसके लिए उसे 200 रुपए देने पड़े। बरसाती टोप से 90 रुपये अधिक कीमती है, टोप और बरसाती दोनों की सम्मिलित कीमत जूतों की कीमत से 160 रुपए अधिक होती है। इनमें से प्रत्येक वस्तु की अलग-अलग कीमत बताओ।

इस पहेली में 'श' मतलब है 'शुरू' और 'ख' का मतलब है 'खत्म'।

अब 'श' से यात्रा शुरू करके 'ख' तक पहुंचना है। रास्ता हम अपनी मर्जी से नहीं चुन सकते। तीर का संकेत जिस दिशा में जाने को कहेगा उसी रास्ते से जाना होगा। हां, जहां दो संकेत हैं वहां अपनी मर्जी से कोई एक दिशा चुन सकते हो, दिशा तुम खुद नहीं बदल सकते।



(2)

मैं एक रेल्वे स्टेशन पर बुकिंग क्लर्क हूं। लोगों को शायद यह काम आसान लगता हो। उन्हें तो इस बात का अंदाज भी नहीं कि एक छोटे से स्टेशन के बुकिंग क्लर्क को भी टिकटों की कितनी बड़ी संख्या के साथ काम करना पड़ता है। तुम खुद सोचो, आखिर यात्रियों को उस लाइन के किसी भी स्टेशन तक जाने के लिए टिकट की जरूरत पड़ सकती है, और एक ही ओर की नहीं, बल्कि दोनों ओर की आती-जाती टिकट की आवश्यकता पड़ सकती है, मैं 25 स्टेशनों वाली लाइन पर काम करती हूं।

बताओ, इन सभी स्टेशनों के लिए कुल कितने टिकट रेल-विभाग को छापना पड़ेंगे?

(3)

रमेश एक फैक्ट्री में काम करता है। पिछले महीने उसे ओवर-टाइम मिला कर 1300 रुपए मिले। इसमें मुख्य वेतन ओवर-टाइम के भुगतान से 1000 रुपए अधिक हैं। बताओ बिना ओवर टाइम के रमेश का वेतन कितना है?

(4)

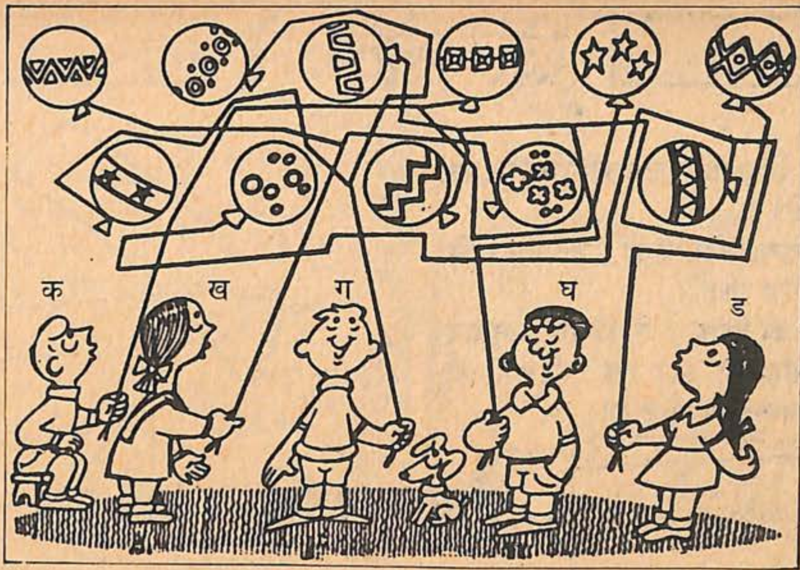
दो टाइपिस्टों को एक रिपोर्ट टाइप करने के लिए दी गई। एक टाइपिस्ट उसे दो घंटे में टाइप कर सकता है और दूसरा तीन घंटे में।

दोनों मिलकर उसे कितने समय में टाइप करेंगे, यदि वे रिपोर्ट को आपस में इस प्रकार बांट लें कि कम से कम समय लगे।

(5)

एक डिब्बे में 10 जोड़ी भूरे रंग के तथा 10 जोड़ी काले रंग के मोजे रखे हैं। एक दूसरा डिब्बा है, जिसमें 10 जोड़ी भूरे रंग के तथा 10 जोड़ी काले रंग के दस्ताने रखे हैं।

दोनों डिब्बों में से कम से कम कितने मोजे और दस्ताने निकालने होंगे कि किसी एक रंग के एक जोड़ी मोजे और एक जोड़ी दस्ताने चुने जा सकें?



ये पांच मित्र गुब्बारे उड़ा रहे हैं। सबके हाथ में कम से कम दो गुब्बारे हैं, पर एक के हाथ में तीन गुब्बारे हैं। ढूंढ़ो वह तीन गुब्बारे वाला कौन है?

(6)

जब मैं सामान खरीदने के लिए घर से निकला, तो मेरे बटुए में नोटों और 20 पैसे के सिक्कों के रूप में लगभग 15 रुपये थे। लौटकर मैंने पाया कि बटुए में एक-एक रुपयों की संख्या उतनी है, जितने पहले 20 पैसे के सिक्के थे, और 20 पैसे के सिक्के उतने हैं, जितने पहले नोट थे। जितने पैसे लेकर मैं चला था, उसका एक तिहाई बचा था। बताओ, कितने का सामान खरीदा मैंने?

(7)

एक घनमीटर के सभी मिलीमीटर भुजा वाले घनों को एक के ऊपर एक रखने पर कितना ऊंचा स्तंभ मिलेगा? जरा सोचकर बताना, क्योंकि उत्तर चौंका देने वाला है!

(8)

यदि हम भूमध्य रेखा पर पृथ्वी के चारों ओर घूमकर आएं तो हमारे पैर अधिक लंबा रास्ता तय करेंगे या सिर?

उत्तर : फरवरी अंक के

(२) शायद तुम सोचो, इस पहेली में ही कोई धोखा है, वरना पितामह और पोते की आयु बराबर कैसे हो सकती है?

स्पष्ट है कि पोते का जन्म 20वीं शताब्दी में हुआ। अत: उसके जन्म वर्ष की संख्या के प्रथम दो अंक 19 हुए। शेष दो अंकों को दो बार जोड़ने से 32 होना चाहिए। अत: ये अंतिम दो अंक 16 हुए। अर्थात् पोते का जन्म सन् 1916 में हुआ और सन् 1932 में उसकी आयु 16 वर्ष थी।

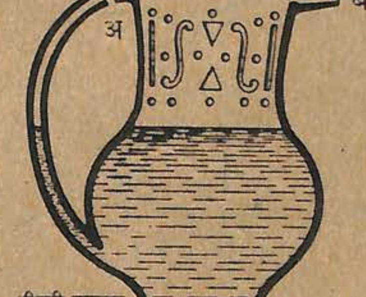
अब यह भी स्वाभाविक है कि दादा का जन्म 19वीं शताब्दी में हुआ। अत: उसके जन्म वर्ष की संख्या के प्रथम दो अंक 18 होंगे। शेष दो अंकों को दुगना करने पर 132 संख्या मिलनी चाहिए। ये दो अंक होंगे 66, अत: दादा का जन्म वर्ष था सन् 1866, और सन् 1932 में उनकी उम्र थी 66 वर्ष।

इस प्रकार सन् 1932 में पितामह और पोते की आयु क्रमश: उनके जन्म वर्षों की संख्याओं के अंतिम दो अंकों के बराबर थी।

(5) बड़े तरबूज का आयतन छोटे से

$1\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4} = \frac{125}{64}$

अर्थात लगभग दुगना बड़ा होगा। इसलिए बड़ा तरबूज खरीदना अधिक फायदेमंद होगा। क्योंकि इसकी कीमत सिर्फ डेढ़ गुनी अधिक है पर इसमें खाद्य पदार्थ दुगना है।



(6) जग के हैंडिल में बने छेद (अ) को उंगली से बंद करके 'ब' सिरे पर मुंह लगाकर सुड़कने पर जग का शरबत जग को बिना झुकाए पिया जा सकता है।

माह की पहेली : तुमने क्या निष्कर्ष निकाला? हमें तुम्हारे उत्तर का इंतजार है। इस पर हम अप्रैल अंक में बात करेंगे।

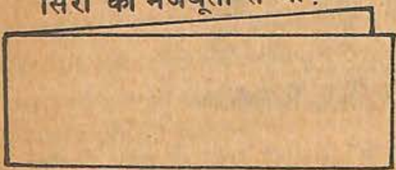
खेल खेल में

पवन चकरी

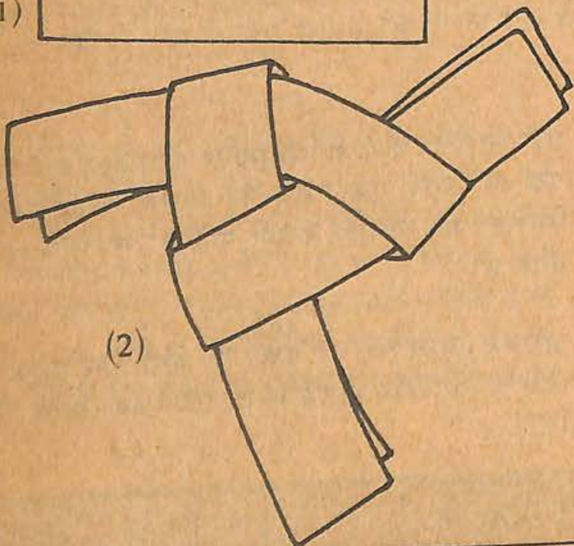
□ 2 सेंटीमीटर x 10 सेंटीमीटर की 3 कागज की पट्टियां काटो।

□ चित्र-1 की तरह पट्टियों को 5 सेंटीमीटर की लंबाई पर मोड़ लो।

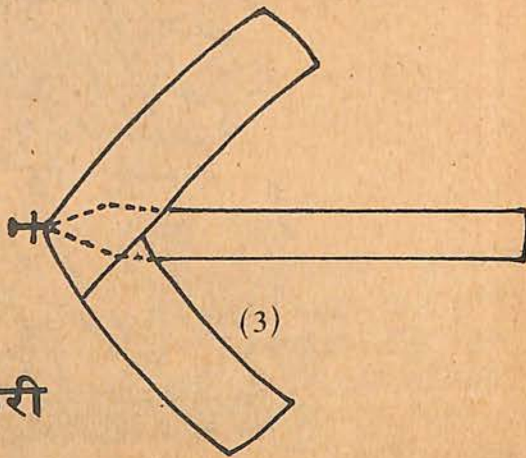
□ इन पट्टियों को चित्र-2 में दिखाए अनुसार आपस में जोड़ लो और इन पट्टियों के सिरों को मजबूती से जोड़ लो।



(1)



(2)



(3)

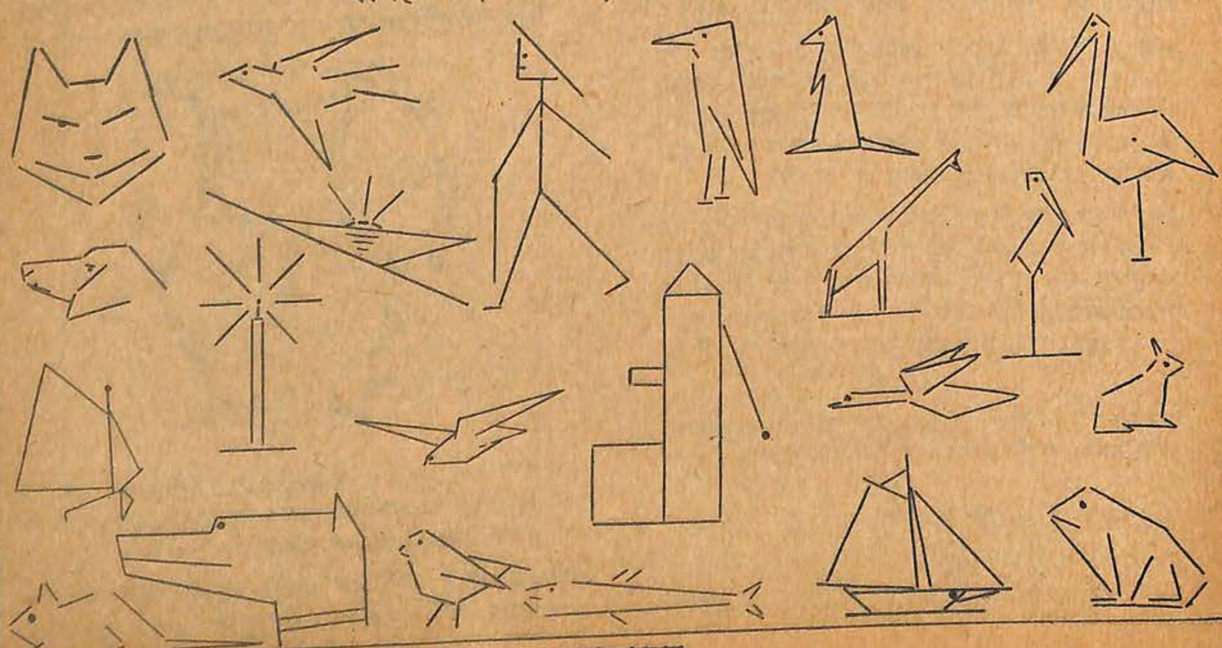


□ 20 सेंटीमीटर लंबी एक सीधी लकड़ी लो। लकड़ी के सिरे को छीलकर (पेंसिल की तरह) नोक बना लो।

□ कागज की पट्टियों को एक कागज के टुकड़े और एक आलपिन की मदद से लकड़ी की नोक चित्र- 3 में बनाए अनुसार जोड़ लो।

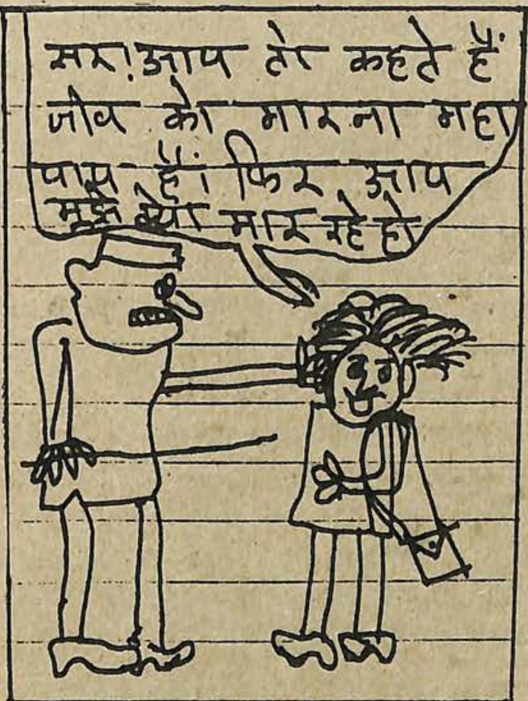
□ तुम्हारी यह चकरी थोड़ी-सी हवा के साथ आसानी से घूमने लगेगी।

बारह लाइन और एक बिन्दु से बनाओ





दीनानाथ सोनी, मुंगेली, बिलासपुर



राजेश शर्मा, पिपलिया स्टेशन, मंदसौर



मुकेश स्वर्णकार, बालौदा बाजार, रायपुर



मुकेश स्वर्णकार

पिछले पन्नों पर तुमने सांप के बारे में पढ़ा। यहां सांप के डसने पर उत्पन्न होने वाले प्रभावों और चिकित्सा के बारे में जानो।

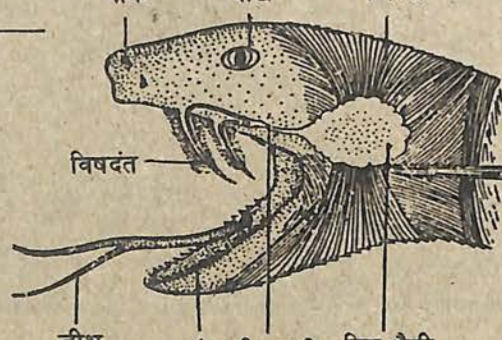
भारत में हर साल विषैले सांपों के डसने की 2,00,000 से कुछ ज्यादा घटनाएं ही होती हैं। इसमें से 15,000 से ज्यादा की मृत्यु हो जाती है। इसका एक मुख्य कारण सांप और सर्पदंश से बचाव के बारे में जानकारी, चेतना का अभाव तथा उचित डाक्टरी चिकित्सा का समय पर न मिलना है।

सबसे ज्यादा मौतें जिन तीन सांपों (नाग, करैत, वाइपर) के काटने से होती हैं वे पूरे देश में पाए जाते हैं। ये रेगिस्तान, उपजाऊ मैदान और पहाड़ी जंगल सभी जगह मिलते हैं। अन्य विषैले सांपों के साथ इनके बारे में अगले अंक में विस्तार से बताएंगे।

यहां हम सांप के काटने पर प्रकट होने वाले लक्षणों तथा प्राथमिक चिकित्सा के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

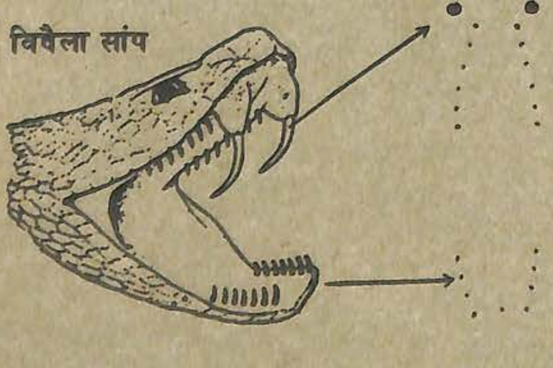
पहली बात तो यह पता लगाना जरूरी है कि काटने वाला सांप जहरीला था या नहीं? अगर सांप मार डाला गया है तो शल्क देखकर यह पहचान करो। (शल्क देखकर पहचान करने के बारे में अगले अंक में बताएंगे।) यदि सांप काटकर भाग गया है तो सांप के दांतों के निशान देखकर यह पता किया जा सकता है। हालांकि यह आसान नहीं है।

अधिकतर विषहीन सांपों में ऊपरी जबड़े पर दांतों की चार पंक्तियां होती हैं। इनमें से दो पंक्तियां ऊपरी तालु पर स्थित होती हैं। शेष दो पंक्तियां जबड़े के किनारे पर होती हैं। दांत पीछे की ओर मुड़े होते हैं ताकि

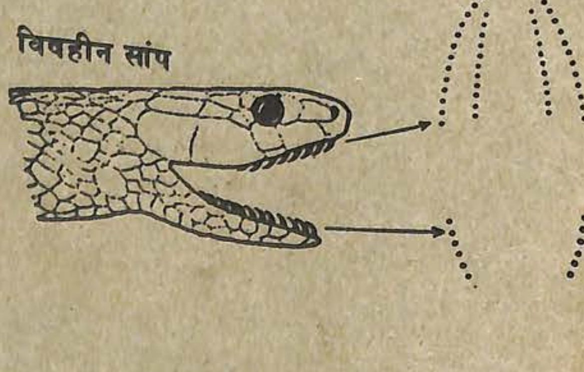


शिकार छूटकर पकड़ से न निकल जाए। विषैले सांपों में ऊपरी जबड़े पर साधारण दांतों के स्थान पर दो विष-दंत होते हैं। ये दांत खोखले या खांचेदार होते हैं। इन दांतों का संबंध एक-एक पतली नली द्वारा आंख के थोड़ा नीचे स्थित विष ग्रंथियों से होता है। विष दंत भी पीछे की ओर मुड़े होते हैं और सामान्य अवस्था में एक खोल में छिपे रहते हैं। काटने के पहले सांप अपना मुंह खोलता है और पीछे से आगे की ओर झटका देकर वार करता है। ऐसा करने से विष दांत खोल से बाहर आ जाते हैं और विष ग्रंथि से विष दांतों में आ जाता है।

प्रायः दांतों के चिन्ह इतने साफ नहीं दिखते जितने यहां चित्र में दिखाए गए हैं। जहां सांप ने काटा है उस स्थान पर केवल एक विषदांत का निशान हो सकता है, दांतों की एक कतार हो सकती है या सिर्फ घाव भी हो सकता है। जब दांतों के निशान से पता नहीं चले तो अन्य लक्षणों पर भी ध्यान देना चाहिए।



विषैले सांपों के काटने पर दो विषदांतों के चिन्ह बनते हैं, और कभी-कभी इसके बाकी दांतों के चिन्ह भी दिखाई दे जाते हैं।



विषहीन सांप के काटने पर काटी हुई जगह पर विष दांतों की बजाए दो कतारों में दांतों के चिन्ह नजर आते हैं।

जहरीले सांप के काटने पर प्रकट होने वाले लक्षण

ये लक्षण 15 से 30 मिनट के अंदर ही प्रकट हो जाते हैं।

- □ काटे हुए स्थान पर बहुत तेज दर्द हो सकता है। कई मामलों में यह दर्द कई दिन तक रह सकता है।
- □ काटे हुए स्थान पर सूजन आ जाती है। सूजन की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि शरीर में विष की कितनी मात्रा गई है। **दुबोइया** और **फुरसा** के काटने पर दर्द और सूजन अधिक रहती है।
- □ काटे हुए स्थान से खून बहना—दुबोइया के काटने पर अक्सर खून बहता है।
- □ काटी हुई जगह के आसपास का रंग बदल जाता है।

सामान्य लक्षण

ये लक्षण 15 मिनट से लेकर एक घंटे के बाद तक प्रकट होते हैं।

- □ व्यक्ति उंघने लगता है।
- □ मांसपेशियों में कमजोरी आ जाती है। विशेष रूप से आंखों के आसपास की मांसपेशियों में। व्यक्ति को एक चीज की दो-दो दिखने लगती हैं। वह भैंगा भी हो सकता है।
- □ मांसपेशियों में लकवा भी हो सकता है।
- □ मुंह से झाग आने लगता है, सांस की गति धीमी पड़ जाती है और सांस रुकने से मृत्यु हो सकती है।
- □ सिरदर्द और चक्कर आना।
- □ ऊबकाई और उल्टियां आना।
- □ खांसी में खून का बलगम आना।
- □ चमड़ी के नीचे खून बहना।

दुबोइया और फुरसा के जहर के प्रभाव से खून का थक्का जमने में दिक्कत आती है। इस कारण से खून का बहना बंद नहीं होता है।

अगर यह पता चल जाता है कि सांप जहरीला था या बताए गए लक्षणों में से कोई लक्षण प्रकट होने लगे, तो पीड़ित व्यक्ति को तुरंत पास के अस्पताल ले जाओ और एंटीवीनम सीरम का टीका लगवाओ। यह टीका अगर सांप काटने के तीन घंटे के भीतर लगाया जाए तो बहुत प्रभावशाली होता है। नाग के काटने पर यह टीका तुरंत लगाया जाना चाहिए।

प्राथमिक चिकित्सा

डाक्टरी सहायता मिलने तक प्राथमिक चिकित्सा में यह करो:

- □ व्यक्ति को शांत रखो। आमतौर पर सांप के काटने पर होने वाली मौतों में से कई घबराहट और सदमें के कारण होती हैं। जबकि काटने वाला सांप जहरीला नहीं होता है या फिर जहर की कम मात्रा शरीर में पहुंचती है।
- □ जिस अंग में सांप ने काटा है उसे बिलकुल न हिलाओ। यह अंग जितना अधिक हिलेगा उतनी ही तेजी से जहर शरीर में फैलेगा। अगर पैर में काटा हो तो लेट जाना चाहिए तथा व्यक्ति को एक कदम भी पैदल नहीं चलना चाहिए।

झाड़-फूंक और देशी इलाज

भारत में खासकर ग्रामीण इलाकों में सांप के काटने पर मंत्र, झाड़-फूंक तथा जड़ी-बूटियों से इलाज किया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से झाड़-फूंक से कोई फायदा नहीं होता है। हां, अगर पीड़ित व्यक्ति इस इलाज में विश्वास करता है तो उसे संभवतः मानसिक संतोष जरूर मिलता है।

आमतौर पर सांप के काटने पर इन स्थितियों में मृत्यु होती है—

- **□ सांप उस श्रेणी का हो जिसके जहर से मनुष्य की मृत्यु हो सकती है।**
- **□ शरीर में मृत्यु के लिए जहर की आवश्यक मात्रा पहुंच गई हो।**
- **□ सदमा या घबराहट।**

अगर पहली दो स्थितियां हैं और समय पर उचित चिकित्सा (एंटीवीनम सीरम का टीका) नहीं मिलती है तो मृत्यु की संभावना है। इन दो स्थितियों के न होने पर व्यक्ति सामान्य उपचार से स्वस्थ हो जाता है। उसे सदमें और घबराहट से बचाना चाहिए। झाड़-फूंक से इलाज करने वाले लोग ऐसे ही मामलों में सफल हो पाते हैं।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि अगर पहली दो स्थितियां हैं तो देशी इलाज तथा अन्य तरीकों में समय नष्ट किए बिना जितनी जल्दी हो सके व्यक्ति को एंटीवीनम सीरम का टीका लगवा देना चाहिए। और सबसे अच्छा इलाज तो यही है कि हम सांपों से बचने की कोशिश करें और उन्हें न छेड़ें।

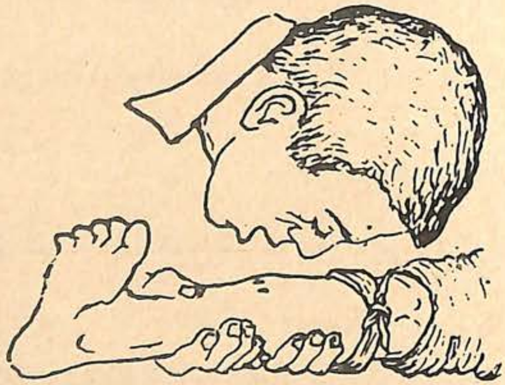
- □ काटे हुए स्थान से थोड़ा ऊपर खून रोकने के लिए—रुमाल, धोती, रस्सी या घास जो भी मिल जाए बांध दो। अच्छा होगा बांधने वाली वस्तु चौड़ी ही हो। पर बंधन इतना कसा न हो कि उसमें ऊंगली भी न जा सके। हर आधा घंटे बाद एक-दो मिनट के लिए गांठ ढीली कर दो और फिर बांध दो। इससे जहर शरीर में जल्द नहीं फैलेगा। अगर सांप काटे दो घंटे से ज्यादा समय हो चुका हो तो बंधन बिलकुल न बांधो।
- □ किसी एंटीसेप्टिक घोल या उबालकर ठंडे किए गए पानी से घाव को साफ कर दो।
- □ एक बिलकुल नए ब्लेड से विषदांतों के निशान पर एक सेंटीमीटर लंबा और आधा सेंटीमीटर गहरा चीरा लगाओ। अगर तुम्हारे मुंह में कोई छाला या घाव नहीं है तो घाव से मुंह लगाकर खून चूस-चूस कर थूक दो। इससे सांप काटे व्यक्ति के शरीर में विष की मात्रा कम हो जाएगी।

यदि सांप काटे आधे घंटे से अधिक समय गुजर चुका है तो चीरा मत लगाओ। ऐसी हालत में चीरा लाभ की बजाए हानि पहुंचा सकता है।

प्राथमिक चिकित्सा में कहा गया है कि अगर तुम्हारे मुंह में छाले या घाव नहीं हैं तो काटी हुई जगह से मुंह के द्वारा खून, चूस-चूसकर फेंकते जाओ।

वास्तव में सांप के जहर को पिया भी जा सकता है। शर्त यही है कि मुंह में छाले या पाचक अंगों में कोई घाव आदि न हो। जहर का पाचन भी हो जाता है। सांप का जहर प्रोटीन का बना होता है। लेकिन इसमें कुछ इस तरह के पदार्थ होते हैं वे खून में पहुंचते ही हानिकारक प्रभाव पैदा करते हैं।

विषहीन सांप के काटने पर किसी विशेष उपचार की जरूरत नहीं है। सिर्फ घाव को साफ करके साफ कपड़ा बांध देना चाहिए।


रेखाचित्र 'जहां डाक्टर न हों' से साभार

एंटीवीनम सीरम (प्रतिदंशविष) क्या है?

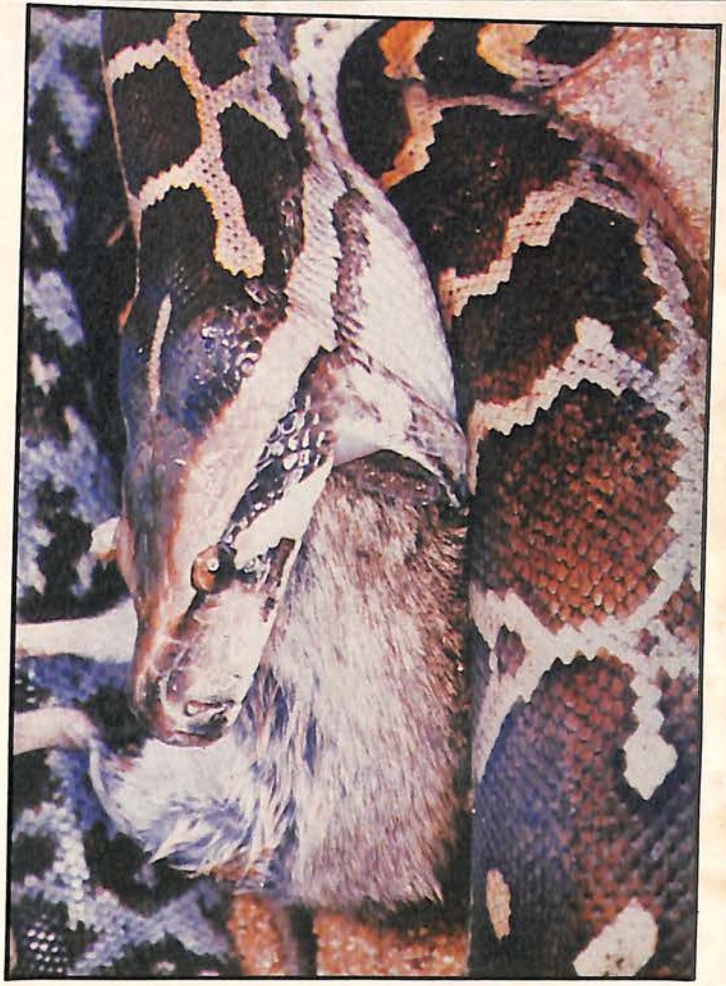
जहरीले सांप के काटने पर शरीर में पहुंचने वाले विष को बेअसर करने के लिए दी जाने वाली दवा को एंटीवीनम सीरम कहा जाता है। यह दवा सांप के जहर से ही बनाई जाती है। भारत में यह सीरम बंबई में स्थित हैफकिन इंस्टीट्यूट बनाता है। यहां वाईपर, नाग, करैत आदि के काटने पर काम आने वाला सीरम बनाया जाता है। पहले अलग-अलग प्रकार के सांप के लिए अलग सीरम बनता था, लेकिन अब ऐसा सीरम बनने लगा है जो किसी भी सांप के काटने पर काम आता है।



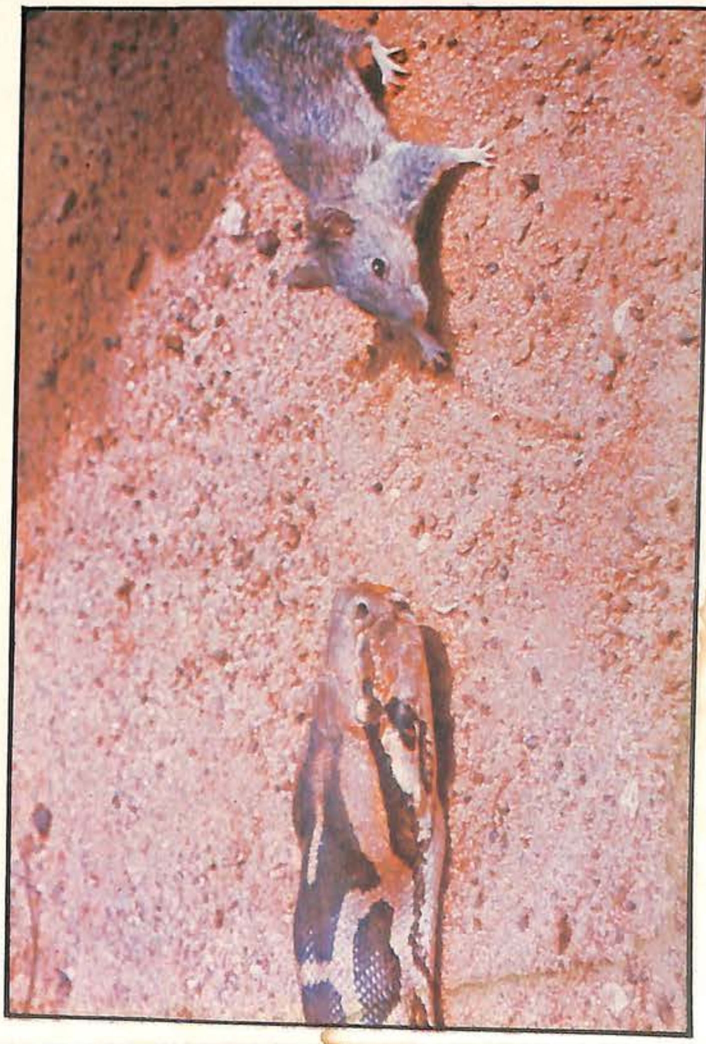


सीरम बनाने के लिए सांप का विष निकालकर एकत्रित कर लिया जाता है। इस विष की थोड़ी-थोड़ी मात्रा घोड़े के शरीर में प्रवेश कराई जाती है। हर बार मात्रा थोड़ी बढ़ा दी जाती है। एक अवस्था ऐसी आती है जब घोड़े के शरीर में सांप के विष के प्रति प्रतिरोधक क्षमता आ जाती है। अब घोड़े के शरीर पर सांप के विष का कोई असर नहीं होता। इस घोड़े का खून निकाल कर उसमें से सीरम (खून का द्रव भाग, जो रंगहीन होता है) अलग करके सुखा लिया जाता है। यही एंटीवीनम सीरम है।











पंजीयन क्रमांक 131/.../95
डाक पंजीयन क्रमांक BL/DN/MP/...
एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित